04 - कर्नाटक की सियासत में अब डीके रहेंगे या सिद्धारमैया

05 - बुरहानपुर में भी आई है ईरान की प्राचीन कनात जल प्रणाली

A Daily News Magazine

इंदौर

शुक्रवार, 28 नवम्बर, 2025

06 - विश्वरंग की छाया-छबियां

07 - एसआईआर अब राजनीति से ज्यादा मानवीय समस्या...

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 63, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सारी दुनिया की जरूरत बन गया है 'विश्वरंग'

'विश्वरंग' के निदेशक और टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे से 'सुबह सवेरे' का संवाद

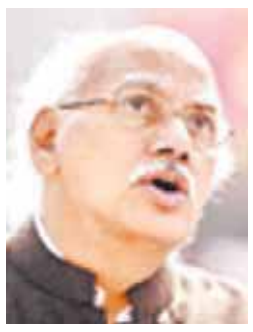

'विश्वरंग' के सातवें सोपान पर रचे गये उत्सव के मूल में भाषा, साहित्य और संस्कृति के वे तमाम रंग हैं, जिसकी आज दुनिया को सबसे अधिक ज़रूरत है। हिन्दी और भारतीय भाषाओं में रचा गया साहित्य, विश्व पटल पर उसकी बढ़ती अहमियत भाषा के साथ कौशल तथा हमारी संस्कृति मनुष्यता को यही तो संदेश देती रही है। विश्वरंग एक बार फिर इस आवाज़ को पुरज़ोर करेगा, हमें विश्वास है। दिलचस्प यह कि अनेक देश विश्वरंग 2025 के साथ खुद को साझा कर रहे हैं। जैसे सारी दुनिया इस सच होते ख्वाब में फिर सिमट आई है। प्रसंगवश 'विश्वरंग' के महानिदेशक, साहित्यकार-संस्कृतिकर्मी संतोष चौबे से हुई दिलचस्प संवाद यहाँ प्रस्तुत हैं।

'विश्वरंग' समारोह की ख्याति दुनियाभर में फैल चुकी हैं। आपके मन में 'विश्वरंग' कब और कैसे कौंधा?

➜ 'विश्वरंग' को दो दृष्टियों से देखा जा सकता है। एक तो हम इसको अपने देश के बाहर से देख सकते हैं और एक देश के भीतर से देख सकते हैं। मुझे लगता है कि हम वैश्विक परिदृश्य को देखें तो दो-तीन बातें बहुत साफ़ हैं। हमारी जो दी हुई धरती थी या हमें जो प्रकृति प्राप्त हुई थी, जिसके साथ हमें जीना था या जिसके साथ हम अपना जीवन-यापन करते थे। इस प्रकृति के अंधाधुंध दोहन से जिस तरह का समाज अब बन रहा है, जिस तरह का विश्व अब बन रहा है, मुझे लगता है कि उसके प्रति संवेदनशील होने की बहुत जरूरत है और वो कलाओं और कला-माध्यमों के द्वारा ही किया जा सकता है।

दूसरी बात यह है कि विज्ञान जिस तरह का मनुष्य बनाने की बात करता है, बायोटेक्नॉलॉजी और बायोइंफॉर्मेटिक्स का जो कन्वर्जन्स है, इसमें मनुष्य को विस्थापित करने की ही बातें हो रही हैं। माने रोबोटिक्स की बात हो रही है, बायोटेक्नॉलॉजिकल मनुष्य की बात हो रही है। तो क्या हम मनुष्य के बिना या मनुष्य की संवेदनाओं के बिना किसी धरती के बारे में सोच सकते हैं? मुझे लगता है कि साहित्यकारों और कलाओं का अब बहुत ज़रूरी काम है कि वो इस संवेदना को पुनः जागृत करें, देखें कि विज्ञान जिस तरह का समाज बनाना चाहता है, जिस तरह से प्रकृति का अंधाधुंध दोहन हमने किया है, उससे हम किस तरह की धरती का निर्माण कर रहे हैं।

और तीसरी बात, जो बहुत ज़रूरी है कि अब टेक्नॉलॉजी बहुत आड़े आती है। यानी इस तरह का एक कुहासा टेक्नॉलॉजी ने हमारे दिमाग़ में खड़ा कर दिया है, इस तरह का एक विभ्रम रच दिया है जिसमें बहुत तीव्र गति से चलने वाली दृश्यावलियाँ हैं, जिसमें हमारे दिमाग में एक तरह का फ्रिगमेंटेशन पैदा हुआ है। इस सबको पुनः केन्द्रित करते हुए मनुष्य मात्र पर और मनुष्य की संवेदनाओं पर केन्द्रित करते हुए काम किये जाने की आवश्यकता लगती है। मुझे लगता है कि ये काम सिर्फ़ कलाएँ ही कर सकती हैं और ये समय जो है, ये कलाओं के हस्तक्षेप का समय है।

'मॉरीशस' और 'श्रीलंका' में विश्वरंग की कल्पना कैसे जागी?

➜ यह सचमुच एक दिलचस्प संयोग है। दरअसल पाँचवें विश्वरंग में मॉरीशस से विश्व हिन्दी सचिवालय की महानिदेशक डॉ. माधुरी रामधारी का आगमन हुआ। वे इस उत्सव के संयोजन और भव्यता पर मुग्ध हुईं। उन्हें इस उत्सव के मूल विचार ने भी बहुत प्रभावित किया। इस प्रभाव के साथ वे मॉरीशस लौटी और 'विश्वरंग' आयोजित करने का प्रस्ताव रखा। वहाँ हिन्दी सचिवालय के साथ ही महात्मा गांधी संस्थान और रबीन्द्रनाथ टैगोर संस्थान भी सह आयोजक की भूमिका में रहे। वहाँ के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री तथा भारतीय दूतावास के उच्च पदस्थ अधिकारियों और हज़ारों की तादाद में मॉरिशस वासियों की उपस्थिति सुखद विस्मय से भरी थी। श्रीलंका में भारतीय उच्चायोग और विवेकानंद केन्द्र के साथ मिलकर छटवाँ कदम हमने पूरा किया। वहाँ हिन्दी के प्रति गहरा लगाव तो दिखा ही, भारतीय संस्कृति के प्रति भी गहरी प्रीति दिखाई दी। ये दोनों विदेश प्रवास 'विश्वरंग' की बहुमूल्य उपब्धि है।

'विश्वरंग' किन अर्थों में अनूठा रचने की कोशिश रहा है?

➜ हाँ... ये जो हमारी मूल अवधारणा है उससे जुड़ा हुआ सवाल है। असल में लिटरेचर फेस्टीवल्स या 'विश्वरंग' जैसे साहित्य समारोहों को आयोजित करने के दो तरीके हो सकते हैं। एक यह है कि आप उसे व्यावसायिक हितों में रचें, दूसरा यह है कि उसमें अंग्रेज़ियत और एक इलिटिज़्म डोमिनेट करें।

हमारे यहाँ जो परिकल्पना है या जो हमारे रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय की परिकल्पना है वो यह है कि भारत, भारतीयता और भारतीय भाषाएँ इसके केन्द्र में होनी चाहिए। हम हिन्दी में और हिन्दी भाषा में बातचीत करने वाले, रचने वाले समाज हैं। हम भारतीय भाषाओं में रचने वाले समाज हैं। हमारी विशद परम्परा अपनी कलाओं की रही है। ये जो पूरे देश में परिदृश्य बना है, जिसमें कि ऐसा लगता है कि उन समारोहों में प्रवेश में दिक़्क़त होती है और जिस तरह की बातें की जाती हैं, तो हमारी कोशिश यह है कि हम हिन्दी और भारतीय भाषाओं को पुनः केन्द्र में लाएँ और जो हमारी परम्परा है और जो हमारी कला और संस्कृति है उसके साथ जोड़कर इस चीज़ की बात करें।

एक विश्वविद्यालय को क्या जरूरत पड़ी कि वो साहित्य और कलाओं का उत्सव रचे? किस नवाचार का आग्रह है?

➜ मुझे ऐसा लगता है कि ये भी एक तरह का शैक्षिक नवाचार है। अगर हमें सन्तुलित मनुष्य बनाना है, अगर हमें एक विचारशील, संवेदनशील मनुष्य बनाना है तो वह विज्ञान की तकनीकों को हासिल करेगा लेकिन कलाओं की तकनीकों को भी हासिल करेगा और कलात्मक रूप से सोचने के लिए वह समृद्ध होगा। तो ये सन्तुलन हर तरह बना रहता है।

'विश्वरंग' का हासिल?

➜ हाँ... ये थोड़ा कठिन सवाल है, लेकिन निश्चित रूप से इसे पूछा जाना चाहिए। मुझे ऐसा लगता है- जैसा मैंने शुरू में भी कहा- ये हमारे पैंतीस-चालीस वर्षों के काम का निष्कर्ष है, कि छात्रों को और आगे चलकर मनुष्य को भी एक सन्तुलित मनुष्य के रूप में व्यवहार करना चाहिए। इसका एक तो इनहेरेंट आइडियालॉजिकल पर्सपेक्टिव यह है कि विज्ञान और कलाएँ साथ-साथ चलें और 'विश्वरंग' के जरिए कोशिश की कि विज्ञान और कलाओं को साथ-साथ लाएँ। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि 'विश्वरंग' की यात्रा अपनी गति और प्रगति में बहुत आगे की संभावना लिए बढ़ रही है। हमारा विश्वास बढ़ा है, यह देखकर कि सारी दुनिया हमारी बुनियादी आकांक्षा में समान रूप से सक्रिय है। सारे संसार की ज़रूरत बन गया हैं 'विश्वरंग'। विश्वरंग की आगामी कड़ियों की मेजबानी के लिए अनेक देश सहर्ष तैयार हैं। निश्चय ही यह आयोजन अभिव्यक्ति का खुला मंच है। यहाँ सहमति और असहमतियों का समान स्वागत है। इसलिए विचार यहाँ खुली हवाओं में सांस लेते हैं।

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

TAGORE INTERNATIONAL LITERATURE & ARTS FESTIVAL

विश्व रंग

भारतीय संस्कृति, वैश्विक मंच!

'विश्व रंग' का छठा महापर्व मप्र की राजधानी भोपाल में हो रहा है। इस चार दिनी आयोजन में संस्कृति के बहुरंग बिखरेंगे। यह आयोजन इस उम्मीद के साथ किया जा रहा है कि भारत और विश्व के अन्य देशों के बीच साहित्यिक सांस्कृतिक संवाद को और मजबूत किया जा सके, संवाद और सहयोग ज्यादा गहरा हो तथा आशा और प्रेम के मूल रंगों से पहचान बढ़े। इसी अवसर पर यह 'विश्वरंग' विशेष–

शरद की सुबह

उन्हें सुगंध से याद करना चाहिए
पीछे छोड़ आए शहरों और गाँवों को
उनके नाम से नहीं
उनकी सुगंध से याद करना चाहिए।
मुझे एक छोटा शहर
व्यस्त सड़क के किनारे
छोटी-सी गुमटी में?
कोयले की भट्टी पर उबलती
चाय की महक-सा याद आता है
एक गाँव पहली बारिश में भीगती मिट्टी की
सुगंध-सा याद आता है।
पीछे छोड़ आये शहर और गाँव
यदि सुगंध से याद न रह सकें
तो उन्हें मौसम से याद करना चाहिए।
मुझे एक शहर ग्रीष्म ऋतु-सा याद आता है
एक गाँव पतझड़ की शाम-सा याद आता है।
पीछे छोड़ आये शहर और गाँव
यदि मौसम से याद न रह सकें
तो उन्हें भाव से याद करना चाहिए।
मुझे एक शहर किशोरावस्था के उल्लास-सा
याद आता है
एक गाँव दिल में घुट कर रह गई आह-सा
याद आता है।
पीछे छोड़ आए शहरों और गाँवों में
जाने के लिए रेल्वे या बस की समय सारिणी
के पन्ने नहीं पलटने चाहिए
उनसे जुड़ी सुगंध, मौसम या भाव
तलाशने चाहिए।

-चंद्रशेखर साकल्ले

'विश्वरंग' में विज्ञान

विश्वरंग में हिंदी की प्रकाशित एक मात्र और श्रेष्ठ पत्रिका 'इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए' विज्ञान और तकनीक का सुन्दर समन्वय है। आज इसकी प्रसार संख्या 40 हजार से अधिक है।

मोहन सगोरिया

सहायक संपादक
इलेक्ट्रॉनिकी

विश्वरंग में हिंदी की प्रकाशित एक मात्र और श्रेष्ठ पत्रिका 'इलेक्ट्रॉनिकी आपके लिए' विज्ञान और तकनीक का सुन्दर समन्वय है। आरंभिक दिनों में यह पत्रिका त्रैमासिक थी। इसका मूल कारण था कि उस समय हिंदी में इलेक्ट्रॉनिक विषयों पर लिखने वाले लेखक गिने चुने थे, जो कुछ नामचीन लेखक थे वे नई पत्रिका के लिए समय दे पाने में असमर्थ थे। साथ ही उस समय आज की तरह उन्नत, सस्ती व सुलभ व्यवस्था भी हीं थी। आरंभ में पत्रिका सामान्य हिंदी टाइप राइटर द्वारा तैयार की जाती थी। तदुपरांत टाइप सेटिंग का कार्य होता था।

पत्रिका में मौलिकता व नवीन सृजन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अनेक लोगों को इससे जोड़ा गया साथ ही विज्ञान पर लिखना भी सिखाया गया। हमने विज्ञान संचार और लेखन की कार्यशालाएं कीं। इनसे जो बातें सामने आयीं, उसमें प्रमुख थी कि उनके अनुसार लिखने की भाषा ऐसी होनी चाहिए कि वो व्यक्ति भी आसानी से समझ सके,जो उसके बारे में कुछ भी न जानता हो। इस पत्रिका की सफलता में भाषा के प्रति हमारे मूलमंत्र सरल व जनसामान्य की भाषा में लिखने का बड़ा योगदान रहा है। पत्रिका त्रैमासिक से द्वैमासिक हुई और फिर इसकी लोकप्रियता व मांग को देखते हुए इसे मासिक कर दिया गया। आज इसकी प्रसार संख्या 40 हजार से अधिक है, जो कि देश की अन्य प्रसिद्ध विज्ञान पत्रिकओं से अधिक है। यह भी इसकी लोकप्रियता का प्रमाण है। पत्रिका की कार्यकारी संपादक विनीता चौबे आज भी अपना दायित्व निभा रही हैं। पत्रिका

के समय समय पर कई विशेषांक निकाले जा रहे हैं। पिछले वर्षों में प्रकाशित होने वाले विशेषांक अल्बर्ट आइंस्टाइन विशेषांक, महिलाएं एवं सूचना तकनीक, पर्यावरण एवं सूचना तकनीक, मल्टीमीडिया एवं शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सूचना तकनीक, अपराध एवं साइबर सुरक्षा, भारत में अंतरिक्ष विज्ञान, ई-गवर्नेंस विशेषांक, ई-प्रकाशन विशेषांक, हिंदी एवं सूचना तकनीक, क्लाउड कम्प्यूटिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता विशेषांक, अक्षय ऊर्जा विशेषांक, भारतीय विज्ञान परंपरा विशेषांक, स्टीफन हॉकिंग विशेषांक, ई-वेस्ट प्रबंधन, जैवविविधता विशेषांक, नैनो टेक्नॉलॉजी विशेषांक, वायरस विशेषांक, डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम विशेषांक, कोविड विशेषांक, कॅरियर विशेषांक, विज्ञान लेखन में महिला रचनाकार, विज्ञान कथा विशेषांक आदि।

पत्रिका की ओर से 2019 में सीवी रमन विज्ञान संचार सम्मान वरिष्ठ विज्ञान संचारक देवेन्द्र मेवाड़ी और सारिका घारू को दिया गया। विज्ञान संचार के क्षेत्र में पत्रिका के इस महत्वपूर्ण अवदान को रेखांकित करने के लिए देश की विभिन्न विज्ञान संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत किया गया।

विज्ञान कविता कोशः विश्वरंग में विज्ञान सम्मत कविताओं का कोश (तीन खंडों में) प्रकाशित हुआ, जो कि देश में किसी भी भाषा में विज्ञान कविताओं पर किया गया पहला काम है।विज्ञान और कविता के स्वरूप को एक साथ

प्रस्तुत करने का यह उपक्रम हिन्दी साहित्य और कदाचित विज्ञान लेखन के क्षेत्र में पहला प्रयास है। विज्ञान कविताओं के संग्रह के लिये 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से आधुनिक समय तक के लगभग 200 वर्षों को कालक्रम माना है।

विज्ञान कथाकोशः साहित्य औरसंस्कृति के विश्वव्यापी कार्यक्रम विश्वरंग में विज्ञान कविताकोश के प्रकाशन की चर्चा रही। विज्ञानकथा कोश हिन्दी में पहली बार प्रकाशित हुआ है जोकि छह खंडों में संपादित है। विदेशी भाषा में तो विज्ञान कविताएँ लिखी जाती रही हैं और उनका संचयन हुआ है किन्तु यहाँ पहली बार हिंदी में इतने वृहद रूप में यह कार्य संपन्न हुआ। कहना होगा कि हिंदी में प्रारंभ में विज्ञान की कहानियाँ रसायन विद्या पर केंद्रित रहीं।

मेरी खुशकिस्मती कि जागी आंखों के इस ख्वाब के गवाह हम भी हुए। देश-दुनिया के साहित्यकारों का जमावड़ा। साहित्य के उन पुरोधाओं से रुबरु होना जिन्हें शब्दों से जाना है, समझा है। कला-संस्कृति के मनीषी भी आए, लेकिन निजी तौर पर मेरे लिए विश्व रंग का जो तजुर्बा उम्र भर की धरोहर है वो अनुभव है दुनिया भर में हिंदी लिख, पढ़ रहे, बोल रहे और हिंदी की चिंता कर रहे हिंदी सेवियों से साक्षात्कार। दक्षिण अफ्रीका, फिलीपींस, बर्मा, श्रीलंका, रुस... इन देशों से आए प्रतिनिधियों की जुबान पर उतरते हिंदी के अल्फाज।

वो पहला मंजर आज भी याद में महकता है

शिफाली

मीडियाकर्मी-साहित्यकार

जिस शहर में पटियों पर जमती हों अदब की मेहफिलें। जिस शहर की फिज़ाओं में शायरी घुली हो। झील किनारे इत्मीनान में बैठे उस शहर में चढ़ते जाड़े के दिनों पूरी दुनिया मेहमान हुई थी। ये विश्वरंग का आगाज़ था। सात दिन, सात रंग। कला और संस्कृति। धाराओं, वादों, विवादों में बँटा साहित्य एक साथ हुआ था। नई-पुरानी ही नहीं, सरहद के पार की भी हिंदी नई धज के साथ आई थी। विश्वरंग के आंगन में बिखरी रौनकें थी सारी। वो पहले क़दम के मंज़र याद आना लाज़मी है।

यूँ देखिए तो दिल्ली को दरकिनार कर भोपाल जैसे शहर में साहित्य-कला और संस्कृति के आयोजन के साथ दुनिया की मेजबानी जोखिम था। बड़ा जोखिम। दुनिया तक पहुंचने की हसरत होती है अमूमन लेकिन दुनिया को अपने दरवाजे

ले आने का जोखिम कौन उठाता है? रवीन्द्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय (भोपाल) के कुलपति संतोष चौबे ने ये जोखिम उठा लिया। इस सपने को जमीन पर लाना बिल्कुल वैसा था कि ग्लोबल को लोकल कनेक्ट दिया जाए। शहर में दुनिया कहाँ समाती है? लेकिन ये भी हुआ। मेरी खुशकिस्मती कि जागी आंखों के इस ख्वाब के गवाह हम भी हुए। देश-दुनिया के साहित्यकारों का जमावड़ा। साहित्य के उन पुरोधाओं से रुबरु होना जिन्हें शब्दों से जाना है,

समझा है। कला-संस्कृति के मनीषी भी आए, लेकिन निजी तौर पर मेरे लिए विश्व रंग का जो तजुर्बा उम्र भर की धरोहर है वो अनुभव है दुनिया भर में हिंदी लिख, पढ़ रहे, बोल रहे और हिंदी की चिंता कर रहे हिंदी सेवियों से साक्षात्कार। दक्षिण अफ्रीका, फिलीपींस, बर्मा, श्रीलंका, रुस... इन देशों से आए प्रतिनिधियों की जुबान पर उतरते हिंदी के अल्फाज। विश्व रंग के जरिए ये आईना भी था कि देखिए तो जरा आपके अपने मुल्क में अंग्रेजी के आगे जो संकोच की जुबान है, वो हिंदी देश के कितने हिस्सों में आत्मीय बनी हुई है। दूसरा तजुर्बा नई वाली हिंदी का। विश्व रंग के आयोजन की बड़ी सफलता ये भी कि उदार मन से इस आंगन में हर एक का स्वागत था। उस नई वाली हिंदी का भी, जिसने कई सारे अवरोध तोड़े हैं। जिसकी शर्त है कि हिंदी पुल बनें। पहुंचे नई पीढ़ी तक। भले नई पौध के अंदाज उनकी जुबान में पहुँचे। लिहाजा देश के वरिष्ठ रचनाकारों-साहित्यकर्मियों के साथ वो युवा लेखक भी विश्वरंग के फ़लक का सितारा बनें। साहित्य से इतर सिनेमा, मीडिया, सोशल मीडिया, पर हिंदी के बदलते तेवर और इनके बीच नई कोंपल की तरह थर्ड जेंडर कवि....जिन्हें भाषा से नहीं, भाव से सुना गया।

कविता में आंखें खोलता....चढ़ती दोपहर में नज़्मों-ग़ज़लों के संग दौड़ लगाता..... ढलती सांझ सरहद पार से आए हमज़ुबानों से बतियाता.... और कहानियों की थपकी लिए सो जाता। भोपाल में बीते ये दिन हौसला देकर गए हैं कि दुनिया को समेटे साहित्य-कला के जलसे अब दिल्ली की सरहद पार कर चुके हैं। कहिए आमीन....विश्व रंग की पाँवीं किस्त के लिए.....

भोपाल का तापमान
अधिकतम 27 °c
न्यूनतम 23°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शुक्रवार, 28 नवंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

3 लाख किसानों के खातों में पहुंचे 238 करोड़ रुपए

श्योपुर में सीएम का कांग्रेस पर हमला, बोले- किसानों का हक हमने दिया, आपने कभी नहीं

श्योपुर (नप्र)। श्योपुर जिले के बड़ौदा में गुरुवार को आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने किसान हितैषी योजनाओं के साथ-साथ कांग्रेस पर तीखे तंज कसे। मुख्यमंत्री ने सिंगल क्लिक के माध्यम से प्रदेश के 305410 प्रभावित किसानों के खातों में 238 करोड़ 78 लाख रुपए की मुआवजा राशि अंतरित की।

श्योपुर, हरदा, विदिशा, नर्मदापुरम्, धार और खंडवा जिलों के 2148 ग्रामों के किसानों को इस राहत पैकेज का सीधा लाभ मिला है। श्योपुर के किसानों को मुआवजे का सबसे बड़ा हिस्सा मिला है। फसल क्षति की मार झेल रहे श्योपुर जिले के 10,078 धान प्रभावित किसानों के खातों में 100 करोड़ 83 लाख रुपए पहुंचे।

हरदा के 95989 किसानों को सोयाबीन क्षति पर 71.52 करोड़, विदिशा के 51830 किसानों को सोयाबीन और उड़द में नुकसान पर 29.15 करोड़, नर्मदापुरम के 22779 किसानों को 19.84 करोड़, धार के 19173

किसानों को 1031 करोड़, और खंडवा के 12961 किसानों को पीला मौजेक कीट से प्रभावित फसलों के लिए 7.13 करोड़ रुपए का भुगतान किया गया।

इस मौके पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि जब भी किसानों पर संकट आया है, भाजपा सरकार ढाल बनकर खड़ी हुई है। कांग्रेस की सरकारें 70 साल रहीं, पर किसान के पसीने की कीमत कभी नहीं समझीं। सीएम ने कांग्रेस पर तंज कसते हुए कहा कान खोलकर सुन लें कांग्रेसी, उन्होंने चवन्नी कभी दी नहीं। हम 16 हजार प्रति हेक्टेयर का लाभ दे रहे हैं। कांग्रेस तीन हजार हेक्टेयर भी नहीं देती थी।

लोकार्पण और शिलान्यास

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने करोड़ों के विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास भी किया। इनमें शामिल हैं सेसईपुरा में 2.75 करोड़ का आदिवासी बालक आश्रम भवन, श्योपुर में 14.80 करोड़ की लागत से नर्सिंग कॉलेज भवन, 14.95 करोड़ की लागत से 50 बिस्तरीय एकीकृत आयुष अस्पताल, 96 लाख की लागत से बागवानी एवं खाद-प्रसंस्करण ज्ञान प्रसार केंद्र, लहरौनी 2.61 करोड़, बलावनी 2.53 करोड़ और डाबीपुरा 2.49 करोड़ में नए 33/11 केवी उपकेंद्रों का शिलान्यास।

पप्पू और पप्पू की मम्मी की सरकार खत्म

कांग्रेस कह रही थी भावांतर का पैसा नहीं देंगे। आकर देख लो कांग्रेसी, जो कहा है वो पूरा कर दिखाया है। पप्पू और पप्पू की मम्मी की सरकार खत्म हो गई। भगवान राम का प्रमाण मांगने वाले कांग्रेसी आज राम मंदिर जगमगाता देख रहे हैं। कांग्रेसी गोपाल कृष्ण भगवान की जय नहीं बोल सकते, बोलते ही बुखार आ जाता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा सरकार किसानों, गरीबों और सनातन परंपरा की वास्तविक चिंता करती है। किसान सम्मान निधि 70 साल कांग्रेस ने नहीं दी, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दी। मध्यप्रदेश में हमने यही राशि दोगुनी की।

मुख्यमंत्री ने कहा किसान खेत में है, जवान सीमा पर है। दोनों की चिंता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करते हैं। भाजपा सरकार खेत से लेकर मंडी तक किसान का हर दर्द समझती है। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को नमन करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना ने गांवों में विकास की नई क्रांति लाई। साथ ही, उन्होंने नदी जोड़ो परियोजना रोकने के लिए कांग्रेस पर निशाना साधा।

बड़ौदा और श्योपुर के लिए नई घोषणाएं, बोले बार-बार आऊंगा

सीएम ने मंच से कई घोषणाएं की। बड़ौदा में बाढ़ समस्या से निपटने बड़े नाले का निर्माण, पुलिस थाने के पास नई पुलिया का निर्माण, बड़ौदा में गीता भवन का निर्माण, चंद्रसागर पर्यटन स्थल एवं शिव मंदिर का जीर्णोद्धार, श्योपुर को पर्यटन का केंद्र बनाने की घोषणा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि श्योपुर में बार-बार आऊंगा, यहां का विकास हमारी प्राथमिकता है। मुख्यमंत्री ने चीता प्रोजेक्ट को लेकर कहा कि इसकी सफलता ने श्योपुर को विश्व पहचान दिलाई है।

कांग्रेस विधायकों को भी घेरा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आपसे भी हाथ जोड़कर निवेदन है, कि हम तो दिल चीरकर आपके स्वागत के लिए तैयार हो जाते हैं। पता नहीं क्या हो जाता है आपने दोनों बार क्या मालूम क्या गड़बड़ है। श्योपुर कि दोनों विधानसभा सीटों पर कांग्रेस के विधायक हैं। इसके संबंध मे यह बात कही है। साथ ही कहा कि इनको लाकर आप भी भुगत रहे होंगे। बड़े मिया तो बड़े मिया छोटे मियां सुभानअल्लाह, कोई काम के ही नहीं है। रोज नौटंकी चप्पल उतार दी तो फिर पहन क्यों लिए। तुम्हारे चप्पल उतारने से पैसे मिल जाएंगे, काका जी का राज है, ये हमारे कमल के फूल कि सरकार के ऐसे कीचड़ में भी कमल खिलाना जानते हैं।

मुजम्मिल बोला- डॉ.शाहीन गर्लफ्रेंड नहीं, बीवी है

- अल फलाह विवि के पास मस्जिद में निकाह हुआ

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली कार ब्लास्ट मामले में गिरफ्तार डॉ. मुजम्मिल अहमद गनई ने राष्ट्रीय जांच एजेंसी की पूछताछ में दावा किया है कि डॉ. शाहीन सईद उसकी गर्लफ्रेंड नहीं, बल्कि बीवी है। अब तक माना जा रहा था कि आतंकी मॉड्यूल में मैडम सर्जन के नाम से मशहूर डॉ. शाहीन मुजम्मिल की प्रेमिका है। सूत्रों के हवाले से बताया कि मुजम्मिल ने सितंबर 2023 में फरीदाबाद की अल फलाह यूनिवर्सिटी के पास एक मस्जिद में

महिला ने जैश के लिए 28 लाख रुपए जुटाए थे

शाहीन से निकाह किया था। शरिया कानून के तहत निकाह के लिए 5-6 हजार के मेहर पर सहमति बनी थी। सूत्रों के अनुसार, डॉ. शाहीन ने जैश मॉड्यूल को हथियार और विस्फोटक जुटाने के लिए 27-28 लाख दिए थे। उसने 2023 में मुजम्मिल को हथियार खरीदने के लिए लगभग 6.5 लाख और उमर को 2024 में फोर्ड इकोस्पोर्ट कार खरीदने के लिए 3 लाख उधार देने की पेशकश की थी। जांच में पता चला है कि मुजम्मिल ने फरीदाबाद में एक घर किराए पर लिया था।

अप्रैल 2026 से 7 दिन में क्रेडिट स्कोर अपडेट होगा

- आरबीआई ने ड्राफ्ट गाइडलाइंस जारी की

नई दिल्ली (एजेंसी)। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने देश के ऋण (लोन) ढांचे को मजबूत करने के लिए 26 नवंबर को ड्राफ्ट गाइडलाइंस जारी की। ये 1 अप्रैल 2026 से लागू होंगी। अब क्रेडिट स्कोर के अपडेट होने के लिए लंबा इंतजार नहीं करना पड़ेगा। सभी क्रेडिट इन्फॉर्मेशन कंपनियों को हर 7 दिन में क्रेडिट स्कोर अपडेट करना होगा। अभी स्कोर 15 दिन में एक बार अपडेट होता है। सीआईएसई को हर महीने 7, 14, 21 और 28 तारीख को और महीने के आखिरी दिन तक का डेटा अपडेट रखना होगा। बैंक हर महीने की 3 तारीख तक डेटा भेजेंगे। इन 4 तारीखों पर नया बदलाव यानी इंक्रीमेंटल डेटा भेजा जाएगा।

विश्वरंग 2025 का गरिमामय शुभारंभ गुरुवार को भोपाल के रवींद्र भवन में राज्यपाल मंगू भाई पटेल ने किया। इस अवसर पर रवीन्द्रनाथ टैगोर विवि के कुलाधिपति संतोष चौबे की उपस्थिति में विभिन्न क्षेत्र की हस्तियों को सम्मानित किया गया।

कोहरे-धुंध में उड़ान से पहले

पांच जांच से गुजरेंगे प्लेन

- पहले के नियम के अनुसार केवल एक बार परमीशन लेनी होती थी

नई दिल्ली (एजेंसी)। नागरिक उड्डयन महा निदेशालय (डीजीसीए) ने कोहरे या धुंध में टेक ऑफ व लैंडिंग के दौरान हादसों से बचने

डीजीसीए ने कहा-

विजिबिलिटी जितनी कम होगी, नियम उतने सख्त

के लिए नई व्यवस्था तय की है। इसके तहत जांच के पांच चरण तय किए हैं, जिन्हें विमानन कंपनी, पायलट व एयरपोर्ट को मानना ही होगा। कोहरे व धुंध में उड़ान को तीन श्रेणियों में बांटा है। यानी की विजिबिलिटी जितनी कम होगी। मानक उतने ही सख्त होंगे। कैटेगरी-1 दृश्यता 550 मीटर तक यानी सामान्य हो, कैटेगरी-2 दृश्यता 300 मीटर रह जाए, कैटेगरी-3

सबसे कम दृश्यता 100 मीटर या उससे भी कम हो जाए। 5 चरणों की परमिशन प्रोसेस के तहत जब तक डीजीसीए यह नहीं देख लेगा कि विमान का ऑटो-पायलट, लैंडिंग सिस्टम और सेंसर सही काम कर रहे हैं, तब तक परमीशन नहीं मिलेगी। बता दें 2023 के सिविल एविएशन रिक्वायरमेंट के तहत अब तक सिर्फ एक बार अनुमति लेनी होती थी और अनुमति पूरे बेड़े पर लागू होती थी। अब हर विमान और हर पायलट को अलग स्तर पर अप्रूवल की प्रक्रिया से गुजरना होगा। यह बदलवा इसलिए जरूरी है क्योंकि घने कोहरे के कारण देश में हर साल सैकड़ों उड़ानें प्रभावित होती हैं। नई व्यवस्था का उद्देश्य यह उड़ान सुनिश्चित करना है।

- **पायलटों को ऐसी उड़ानों का प्रशिक्षण लेना होगा-** हर पायलट को कैटेगरी-2 और 3 उड़ानों के लिए अलग से विशेष प्रशिक्षण लेना होगा। इसमें सिम्युलेटर में 'कम दृश्यता में लैंडिंग', आपात स्थिति में 'गो-अराउंड' और ऑटो-लैंडिंग सिस्टम की समझ का अभ्यास शामिल होगा। सभी आईएलएस, रेडियो ऑल्टीमीटर और ऑटो-पायलट सिस्टम का हर छह महीने में परीक्षण अनिवार्य किया गया है। यदि कोई विमान 30 दिन तक इन कैटेगरी में फ्लाइट नहीं करता, तो दोबारा उड़ान से पहले उसे ग्राउंड टेस्ट या टेस्ट फ्लाइट देनी होगी।

भारत का पहला प्राइवेट ऑर्बिटल रॉकेट तैयार

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी ने गुरुवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए भारत के पहले प्राइवेट ऑर्बिटल रॉकेट विक्रम-1 को दुनिया के सामने रखा। इस रॉकेट की ऊंचाई 26 मीटर यानी करीब 85 फीट है। रॉकेट को प्राइवेट स्पेस कंपनी स्काईरूट एयरोस्पेस ने बनाया है। इस रॉकेट को 2026 में लॉन्च किया जाएगा। यह अपने साथ 300 किग्रा सैटेलाइट ले जाने में सक्षम है। पीएम ने रॉकेट के अलावा कंपनी के नए इनफिनिटी कैंपस का भी इनॉगरेशन किया। इस कैंपस में कई लॉन्च व्हीकल के डिजाइन, डेवलपमेंट, इंटीग्रेशन और टेस्टिंग का काम किया जाएगा। कैंपस तेलंगाना के हैदराबाद में बना है। कंपनी का हेड ऑफिस भी यहीं है। स्काईरूट एयरोस्पेस कंपनी की स्थापना पवन चंदना और भरत ढाका ने 2018 में की थी। यह दोनों आईआईटी पासआउट हैं और इसरो के पूर्व साइंटिस्ट रह चुके हैं। आज भारत स्पेस इकोसिस्टम के प्राइवेट सेक्टर में बड़ी उड़ान भर रहा है। स्काईरूट का इनफिनिटि कैंपस भारत की नई सोच, इनोवेशन का प्रतिबिंब है। हमारी युवा शक्ति की इनोवेशन, रिस्क टेकिंग एबिलिटी आज नई बुलंदी छू रही है। आज यह

- 300 किलो तक के सैटेलाइट अंतरिक्ष में ले जाएगा
- पीएम मोदी ने किया उद्घाटन किया, अगले साल लॉन्चिंग

कार्यक्रम इस बात का प्रतिबिंब है कि आने वाले समय में भारत रॉकेट ग्लोबल सेक्टर में लीडर बनकर उभरेगा। पीएम ने स्काईरूट के फाउंडर के बारे में कहा कि आप दोनों ने खुद पर भरोसा किया, आप रिस्क उठाने में पीछे नहीं रहे। इसका परिणाम आज पूरा देश देख रहा है। इसरों ने दशकों तक भारत की स्पेस यात्रा को उड़ान दी है। बदलते हुए समय में स्पेस सेक्टर का विस्तार हो रहा है। इसलिए ही हमने भारत के स्पेस सेक्टर में ऐतिहासिक रिफॉर्म किए। सरकार ने स्पेस सेक्टर को प्राइवेट इनोवेशन के लिए ओपन किया। नई स्पेस पॉलिसी तैयार की।

देश और पीएम मोदी के खिलाफ बनाया जा रहा है नया नरेटिव

नई दिल्ली (एजेंसी)। बीजेपी ने एक बार फिर कांग्रेस और राहुल गांधी पर देश और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ नरेटिव बनाने का आरोप लगाया है। बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता संबित पात्रा ने गुरुवार को नई

- बीजेपी बोली-विदेशों से संचालित हो रहे कांग्रेस नेताओं के 'एक्स' अकाउंट

दिल्ली में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कांग्रेस पर वोट चोरी, ऑपरेशन सिंदूर के लिए गलत नरेटिव सेट करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि कुछ कांग्रेस नेताओं के एक्स अकाउंट यूएस से संचालित हो रहे हैं। संबित पात्रा ने गुरुवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस कर आरोप लगाया कि 2014 से कांग्रेस पार्टी विशेष रूप से राहुल गांधी और उनकी टीम और लेफ्ट के जाने-माने चेहरे पीएम मोदी और भारत

को अपमानित करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। उसके लिए वह विदेशी ताकतों का सहारा ले रहे हैं और विदेश से अपने अकाउंट्स का संचालन करा रहे हैं, जिससे भारत में नरेटिव गढ़ने की कोशिश की जा रही है।

राजा भोज की ऐतिहासिक नगरी धार में उच्च शिक्षा ढाँचे के विस्तार की नींव रखी गई , मिली करोड़ों की सौगात

- गुरुवार का दिन धार जिले में उच्च शिक्षा की अधोसंरचना को मजबूत बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम

(राजेश शर्मा)

धार। राजा भोज की ऐतिहासिक धरा , शिक्षा और संस्कृति की नगरी के लिए प्रसिद्ध धार के लिए गुरुवार का दिन कई सौगातों से भरा रहा। करोड़ों की सौगात से धार में उच्च शिक्षा ढाँचे के विस्तार की नींव रखी गई । धार जिले में उच्च शिक्षा की अधोसंरचना को मजबूत बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया। केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर , लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) मंत्री राकेश सिंह , विधायक नीना वर्मा की गरिमामयी उपस्थिति में उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत 18.26 करोड़ की लागत से होने वाले निर्माण कार्यों का भूमिपूजन किया गया। इस समारोह के साक्षी बने जिला पंचायत अध्यक्ष सरदारसिंह मेड़ा, पूर्व मंत्री राजवर्धन सिंह दत्तीगांव, भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती, ग्रामीण जिला अध्यक्ष चंचल पाटीदार, भाजपा प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल।

जिले में उच्च शिक्षा से जुड़ी अधोसंरचना को मजबूत बनाने की दिशा में गुरुवार को एक महत्वपूर्ण कदम उठाया । लोक निर्माण विभाग

(पीडब्ल्यूडी) मंत्री राकेश सिंह ने भवन विकास निगम (लो.नि.वि.) द्वारा उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत 18.26 करोड़ की लागत से होने वाले निर्माण कार्यों का भूमिपूजन किया।

राजा भोज ने जिस भारतीय संस्कृति और मूल्यों के अनुरूप विकास की नींव रखी थी, उसकी झलक आज भी प्रदेश के विकास में दिखाई देती है- पीडब्ल्यूडी मंत्री राकेश सिंह ने कहा कि धार संस्कृति और सभ्यता का अनूठा संगम है। उन्होंने कहा कि राजा भोज ने जिस भारतीय संस्कृति और मूल्यों के अनुरूप विकास की नींव रखी थी, उसकी झलक आज भी प्रदेश के विकास में दिखाई देती है। उन्होंने बताया कि मध्यप्रदेश सरकार ने इस विरासत को सम्मान देते हुए उत्कृष्ट पुरस्कार का नाम राजा भोज के नाम पर रखा है।

पीडब्ल्यूडी मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सोच विजनरी है और देश ने उनके विकासवादी दृष्टिकोण को स्वीकार किया है। उन्होंने कहा कि यह आमजन द्वारा जनप्रतिनिधियों के कार्य के मूल्यांकन का समय है और सरकार इस कसौटी पर खरी उतरने का प्रयास कर रही है।

1 दिसंबर तक करें इंतजार, कुछ बड़ा है प्लान

- एनजेएसी बहाली पर विचार करेंगे नए सीजेआई सूर्यकांत
- सीजेआई ने जजों की नियुक्ति को लेकर दिया बड़ा संकेत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के नए चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने कहा है कि नेशनल ज्यूडिशियल अपॉइंटमेंट्स कमीशन को फिर से स्थापित करने की याचिका पर विचार करेंगे। हायर जुडिशरी में जजों की नियुक्ति के लिए इसे मौजूदा कॉलेजियम सिस्टम की जगह पर लाया गया था, जिसे एक दशक पहले सुप्रीम कोर्ट ने ही खारिज कर चुका है। सीजेआई सूर्यकांत ने पिछले सोमवार से भारत के नए प्रधान न्यायाधीश के तौर पर कार्यभार संभाला है। उन्होंने पूर्व सीजेआई बीआर गवई की जगह ली है। एक रिपोर्ट के अनुसार सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को वकील मैथ्यूज नेदुमपारा ने सुनवाई के दौरान सीजेआई सूर्यकांत से एनजेएसी पर विचार

करने को लेकर मौखिक अनुरोध किया, जिसपर उन्होंने यह टिप्पणी की। 2015 में सुप्रीम कोर्ट ने संसद से बने एनजेएसी कानून और 99वें संविधान संशोधन को असंवैधानिक कहकर खारिज कर दिया था। इसमें ऊंची अदालतों में जजों की नियुक्त का अधिकार कॉलेजियम सिस्टम की जगह नेशनल ज्यूडिशियल अपॉइंटमेंट्स कमीशन को दिया गया था। सुनवाई के दौरान वकील ने अदालत से कॉलेजियम सिस्टम पर फिर से विचार करने और एनजेएसी के फैसले को फिर से देखने की गुजारिश की; और कहा कि पिछली बेंचों ने उनके अनुरोधों पर ठीक से गौर नहीं किया। इस पर, सीजेआई बोले, हां, हम देखेंगे। इस दौरान बेंच के साथ विदेशी जज भी मौजूद थे। खास बात ये है कि बुधवार को 76वां संविधान दिवस भी था, जब कॉलेजियम सिस्टम की जगह एनजेएसी पर फिर से विचार करने की मांग की गई। वहीं, एक रिपोर्ट के अनुसार जब वकील ने बेंच से यह कहा कि अन्य बेंचों ने उनके अनुरोध पर ध्यान नहीं दिया है तो सीजेआई सूर्यकांत ने हिंदी में कहा,अब हम हिंदी में जवाब देंगे...जानबूझकर ये कर रहे हो तुम...हम हिंदी में बात करेंगे। हालांकि, वकील का कहना था कि वह हिंदी नहीं समझते। इसपर सीजेआई ने कहा कि हम याचिका पर विचार करेंगे। 2015 में सुप्रीम कोर्ट की पांच सदस्यीय संविधान पीठ ने नेशनल ज्यूडिशियल अपॉइंटमेंट्स कमीशन को 4-1 के बहुमत के फैसले से असंवैधानिक करार दिया।

जब भोपाल में उतरते हैं कलाओं के मौसम

विनय उपाध्याय
निदेशक, टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र

मधुमास बेशक अभी दूर है लेकिन पहाड़ियों-तलैयों के शहर भोपाल की वादियों में इधर नवम्बर का महीना वक्त से पहले गुलजार होने को तैयार है। ये आहट 'विश्वरंग' की है। अदब और तहज़ीब के बेमिसाल सिलसिलों से रूहानी नाता जोड़ने जैसे, सारी दुनिया एक बार फिर उसकी आगोश में सिमटने को तैयार है।

सात बरस पहले जाड़े के इसी गुलाबी मौसम में 'विश्वरंग' का बीज अँखुआया था। उसकी पहली ही किलकारी में एक महागान का संगीत उमड़ आया था।ये आवाजें समंदर पार तक पहुँची। कमाल, कि एक-दो-दस नहीं पचास से भी अधिक देश आज 'विश्वरंग' की मेज़बानी करने अगुआ हुए हैं। तो 2025 के 'विश्वरंग' का नक्शा तैयारहै। 27 से 30 नवबर की तारीख़ों में साहित्य, संस्कृति और कलाओं का यह समागम भोपाल के आँगन में अपनी महफ़िलों से रौशन है। यहाँ संस्कृति की तन्मयतान, विरासत का विजयगान और संवादों की लय पर विचारों का आदान-प्रदान है। एक खुला आसमान, जो मनुष्यता की इबारत रच रहा है।लालित्य की लालिमा से ओर-छोर दमक रहा है। वक्त की किताब में एक सुनहरा पन्ना है जिसके माथे पर लिखा है- 'विश्वरंग'।

साहित्य और संस्कृति का ऐसा अनुष्ठान, जहाँ उठ रही हर आवाज, करुणा और भाईचारे की कामना से भरी है।....कुछ ऐसे ही चम्पई अहसास जब यादों के दरीचे खटखटाते हैं तो विश्वरंग के खुलते आंगनों में चहक-महक से तारी महफिलों के मंजर उजले होने लगते हैं। ये महफ़िलें हिन्दुस्तानी तहज़ीब के छलकते समंदर और उसमें सदियों से लहराती स्वायतों के दरिया के किनारे बैठकर चैन के लम्हें गुज़ारने का बेशक़ीमती ज़रिया है। एक आन्दोलन एक अभियान, एकमिशन। हमारे वक्ती दौर के ज़रूरी और ज्वलन्त मुद्दों और विषयों पर बहस-मुबाहिसों का एक ऐसा समावेशी मंच, जहाँ तमाम खानाबन्दियों से निकलकर विचार की खुली सांस भरी जा सकती है। यह मुमकिन हुआ है- 'विश्वरंग' में।

दिलचस्प यह कि इस सांस्कृतिक अनुष्ठान का सपना रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय जैसे निजी शैक्षणिक संस्थान ने देखा और उसे बड़ी ही सूझबूझ भरी आपसदारी के साथ पूरा किया। यहाँ शब्द, दृश्य, रंग-लय और ध्वनियों का खूबसूरत ताना-बाना रचनेसाहित्य, संस्कृति, कला, शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, पर्यावरण, मीडिया और उद्यमिता की गुणी और नामचीन शख्सियतें साथ साथ हैं। एक उत्सव के संयोजन में भारतीय भाषाओं और इंसानी उसूलों की महक को थामना उसके मक़सद का खुलासा करताहै। 'विश्वरंग' के परिकल्पनाकार कथाकार-कवि और टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे इस अभियान को अपने समय का जरूरी हस्तक्षेप बताते हैं। पूर्व राष्ट्रपति भारतरत्न प्रणव मुखर्जी ने 'विश्वरंग' को परम्परा और आधुनिकता का संयोग कहकर इसकी अहमियत को रेखांकित किया था। 'विश्वरंग' की सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ इस सच के पास ले जाती हैं कि साहित्य और कलाओं के अन्तर सम्बन्धों की बुनियाद में सदा से एक सृजनात्मक बेचैनी रहीहै। वो अकुलाहट जो नया अनूठा और बहुरंगी रचना चाहती है। हमारा समूचा सांस्कृतिक परिवेश इसी कलात्म कविविधता, सौन्दर्यबोध और पार आनन्द से सराबोर है। आपाधापी से भरी बोझिल और बेस्वाद होती जा रही दुनिया आख़िरथक-हारकर संस्कृति की छाँव में ही सुस्ताना चाहती है।

'विश्वरंग' काबीजमंत्र, मनुष्य की महिमा की पुकार है, जो शताब्दियों से चली आ रही महान सांस्कृतिक परम्परा के गौरव को गाना, अपने समय की नई धड़कनों को सुनना चाहती है।प रिकल्पना, संयोजन और पूरे सांस्कृतिक विन्यास में 'विश्वरंग' की यह मंशा मूर्त होती दिखाई देती है।

समारोह का शुभारंभ संध्या रवीन्द्र भवन के मुक्ताकाश मंच पर श्रीकृष्ण लीला का भव्य मंचन होगा। दिल्ली के श्रीराम कला केन्द्र के कलाकारों का दल महानायक श्रीकृष्ण के जीवन के विविध प्रसंगों का मंचन करेंगे। विश्वरंग के गुलदान में ध्रुपद की तान और मंगलगान है तो सितार के तारों से झरती धुनों का आनंद भी है। गुरूदेव की भूमि से उड़कर आयी बांग्ला संगीत की मटियारी खुश्बू है तो बुंदेली और मालवी लोक-संस्कृति तथा परंपरा के नृत्य-संगीत की अल्हड़ अलमस्ती है। रवीन्द्र भवन के मुक्ताकाश में असम और मणिपुरी राज्यों के जनजातीय और लोक कलाकार अपनी धरोहर का इन्द्रधनुषी ताना-बाना लिए विश्वरंग की शामों को चहक-महक से सराबोर करेंगे। इसी बीच विश्वरंग के आंगन में नौनिहालों के लिए कठपुतली का खेल होगा। चित्रकला की प्रदर्शनी और चित्रकारों का संवाद रंग-रेखाओं तथा सृजन के कौशल की अनूठा सौगात बनेगा।

30 नवंबर की शाम प्रजावत्सल राजमाता अहिल्याबाई की जीवन गाथा पर केन्द्रित नाटक का भव्य मंचन होगा। ढलती शाम 'पूर्वरंग' का मंच 'वंदेमातरम्' सहित देशभक्ति के गीतों से गूँजेगा। इसी सिलसिले में संतवाणी की संगीत प्रस्तुति आध्यात्मिक रंजकता प्रदान करेगी। 'आदिरंग' परिसर में एक और आकर्षण जुड़ेगा 'विश्वरंग फाउंडेशन' द्वारा निर्मित दो हेरिटेज डॉक्यूमेंट्री फ़िल्मों का प्रदर्शन। ये फ़िल्में मध्यप्रदेश के निमाड़ अंचल के दो लोक पर्वों 'गणगौर' और 'संजा' पर केन्द्रित हैं। द पोडियम' टीम के संयोजन में बने इन वृत्तचित्रों का निर्देशन युवा फ़िल्मकार आदित्य उपाध्याय ने किया है। पटकथा कला समीक्षक विनय उपाध्याय ने लिखी हैं। तकनीकी समन्वय विभोर उपाध्याय ने किया है।

सरज़मीं पर सितारे

विश्व रंग के इन्द्रधनुषी ताने-बाने में भाषा, साहित्य संस्कृति, कला, मीडिया, शिक्षा, पर्यावरण, विज्ञान, टेक्नालॉजी और मनोरंजन की दुनिया के अनेक सितारों की महफ़िल सजेगी। इनमें पद्मश्री, साहित्य अकादेमी, संगीत नाटक अकादेमी तथा अनेक राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय सम्मानों से अलंकृत जानी-मानी हस्तियाँ हैं। इनमें प्रमुख हैं डॉ. नंदकिशोर आचार्य, ममता कालिया, शिवमूर्ति, ज्ञानप्रकाश विवेक, स्वानंद किरकिरे, अनामिका, अष्टभुजा शुक्ल, मुकुर शर्मा, नर्मदाप्रसाद उपाध्याय, दिव्या माथुर, महादेव टोप्पो, उर्मिला शिरीष, मनीषा कुलश्रेष्ठ, विनोद तिवारी, ओम थानवी, सुमित अवस्थी, पुष्पेष पंत, दामोदर खड़से, डॉ. स्नेहलता नेगी, मुरलीधर चाँदनीवाला, डॉ. लता मुंशी, कविता शाजी, सुचित्रा हरमलकर, विकास मिश्र, लक्ष्मण गायकवाड़, नरेन्द्र कामंत, हरीश मीनाश्रु, अशोक भौमिक, लीलाधर मंडलोई, जितेन्द्र श्रीवास्तव, सविता भार्गव, नीलेश रघुवंशी, राधाकृष्ण पिल्लई, फैज़ल मलिक, दिव्या दत्ता, प्रिया मलिक, सीमा रायजादा, विकास दवे, मुकेश वर्मा, बलराम गुमास्ता, राजेश व्यास, स्वरांगी साने। ये शख्सियतें विभिन्न विषयों पर रोचक संवादों के साथ ही सांस्कृतिक परिवेश को अपनी कलात्मक ऊर्जा से समृद्ध करेंगे।

सरहद पार पंख पसारती हिन्दी

जवाहर कर्नावट
निदेशक, प्रवास भारतीय साहित्य-संस्कृति केन्द्र

दुनिया भर में बसे हुए भारतवंशियों का जुड़ाव अपनी भाषा और संस्कृति से होने के कारण इन देशों में 'लिटिल इंडिया' के दर्शन हो जाते हैं। इन प्रवासी भारतीयों की एक प्रमुख चुनौती नई पीढ़ी को अपनी भाषा और संस्कारों से परिचित कराते हुए प्रवासी देश के साथ तादात्य बनाए रखना भी है। भारतीयता को बनाए रखने के प्रयासों में अपनी भाषा को विदेशों की परती पर फैलाने का कार्य भी इन प्रवासी भारतीयों ने बखूबी किया है। भारत की प्राचीन संस्कृति,परंपराओं और ऐतिहासिक ग्रंथों को समझने के लिए भी अनेक विदेशी विद्वानों ने भी हिंदी में अध्ययन और शोध के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। इस प्रकार विश्व के विभिन्न देशों में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा तक पहुँच गई है। अनेक देशों में सामुदायिक गतिविधियों के रूप में भी हिंदी प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। विश्व के प्रमुख देशों के भ्रमण के दौरान मुझे हिंदी भाषा के शिक्षण तथा साहित्य संबंधी अध्ययन एवं शोध की समृद्ध परंपरा देखने को मिली। गिरमिटिया देशों मॉरिशस,फिजी,गयाना त्रिनिदाद टोबेगो, दक्षिण अफ्रीका के अलावा यूरोप अमेरिका, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप में भी हिंदी शिक्षण की जड़ें गहरी हो चुकी हैं।

आज प्रमुख आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक देश के भाषिक और सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप हिंदी शिक्षण के समूचे ढांचे को सुदृढ़ किया जाए। अन्य विदेशी भाषाओं की तुलना में हिंदी भाषा में विद्यार्थियों की संख्या लगातार कम हो रही है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री का अभाव वर्षों से बना हुआ है। दूसरी ओर भाषा से जुड़ी तकनीकी सुविधाओं में क्रांतिकारी परिवर्तनहो रहा है। भाषा प्रयोग के अवसर और क्षेत्रों में भी बदलाव हो रहा है। इस स्थिति में इन सभी देशों की दृष्टि भारत की ओर है। उनकी अपेक्षा है कि उन्हें हिंदी भाषा-शिक्षण को अधुनातन बनाने के लिए अधिक से अधिक संसाधन भारत से मिल सकें। इसमें भारत सरकार के विदेश मंत्रालय तथा शिक्षा मंत्रालय से सम्बद्ध संस्थाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारे दूतावासों का सकारात्मक रवैया भी आवश्यक है। इन देशों के हिंदी प्राध्यापकों का यह भी स्पष्ट मत है कि भारत के सामाजिक एवं शैक्षिक जीवन में हिंदी की उपेक्षा का प्रतिकूल प्रभाव विदेशों में हिंदी शिक्षण पर होता ही है। इसलिए यह भी आवश्यक है कि भारत मंव सभी स्तरों पर हिंदी को प्रतिष्ठित करने के गंभीर प्रयास हों।

विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ रही है और देश की प्रतिनिधि भाषा माने जाने के कारण हिंदी की भी। प्रवासी भारतीयों की सामाजिक और सांस्कृतिक सक्रियता तथा संबंधित देश की शिक्षण संस्थाओं में हिंदी के पठन-पाठन की शताब्दी से अधिक पुरानी शिक्षण परम्परा के कारण हिंदी विश्व के अधिकांश देशों में विद्यमान है और यह तो निर्विवाद है कि भारत के इतिहास,संस्कृति एवं परंपराओं के समुचित अध्ययन एवं अध्यापन हेतु हिंदी तथा संस्कृत भाषा से परिचय अपरिहार्य है। इन सभी तथ्यों के दृष्टिगत यह अत्यंत आवश्यक है कि वैश्विक स्तर पर हिंदी को समृद्ध करने हेतु योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जाए। हिन्दी के प्रति गहरे प्रेम और जिज्ञासा के चलते जब मैंने भारत के बाहर क़दम रखा तो आश्चर्यजनक समर्पण वहाँ दिखाई दिया। वहाँ हिन्दी को केन्द्र में रखकर हुआ प्रचार, सृजन और नए माध्यमों से उसके नवाचारी कौशल को देखने-समझने मेरी शोध यात्रा शुरू हुई। मैंने लगभग 70 देशों की हिन्दी रिपोर्ट तैयार की है।

सांस्कृतिक परस्परता के नए अध्याय

मॉरीशस, श्रीलंका और मुंबई में विश्वरंग आयोजन

समय की सफहों पर जब तारीखें गहरे दस्तखत करती हैं तो यादों के मायने कुछ अलग हो जाते हैं। सुनहरे इतिहास की कैफ़ियत भी कुछ ऐसी ही स्वप्न है 'विश्वरंग'। एक भरे-पूरे उत्सव की चहक-महक लिए यह सपना गुज़िश्ता पाँच बरसों की यादों को संजोए अपनी छटवीं पायदान तय करने पहुँचा। अपने राग-रंग में भीगा यह मन्ज़र भाषा, संस्कृति, मानी प्रेम, सौहार्द और शान्ति के आसपास सिमट जाते हैं। साहित्य और कलाओं को दामन में समेटे उस परस्परता को पुकारता रहा जहाँ मानवीय दुनिया के मानी प्रेम, सौहार्द्र और शांति के आसपास सिमट जाते हैं।

देश मॉरीशस में इसी इरादे के साथ दस्तक दी 'विश्वरंग' ने। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल (भारत) की बुनियादी आकांक्षा विश्वरंग के साथ उड़ान भरती अपने पड़ोसी देश पहुँची। दो मुल्कों के साझा विश्वास को ज़मीनी विस्तार मिला।यूँ एक मिशन, एक आन्दोलन, एक सफ़र अपने मक़सद में कामयाबी का परचम लिए एक क़दम और आगे बढ़ा। महासागर के तट पर यह संस्कृति का नया सूर्योदय था।

सात, आठ और नौ अगस्त 2024 की दरमियानी तारीख़ों में 'विश्वरंग' अपना ताना-बाना लिए उस देश की सरहद में दाख़िल था जिसके अदम्य पुरुषार्थ और समर्पण की कहानी इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित है। ये वही मॉरीशस है जो ज्वालामुखी के बाद जलसागर के तट पर जीवन बसाने की जिजीविषा की ज्वलंत मिसाल है। फिरंगियों की साज़िश पर सज़ा पर भेजे गए भारतवंशी मज़दूरों ने अपनी संस्कृति का स्वर्ग बसाया है। 'विश्वरंग' इसी धरती पर सांस्कृतिक मैत्री का बिरवा रोपने का यह सुनहरा ख़्वाब था। विश्व हिन्दी सचिवालय, महात्मा गांधी संस्थान, टैगोर संस्थान, हिन्दी प्रचारिणी सभा, हिन्दी स्पीकिंग यूनियन इस मिशन में अगुआ हुए। भारत के अलग-अलग शहरों और सुदूर देशों से लेखक-कलाकारों तथा हिन्दी-प्रेमी प्रचारकों का काफ़िला अपने साथ ढ़ेर सारी सौग़ातें लिए था। 'विश्वरंग' के स्वप्नदर्शी शिल्पी संतोष चौबे के नेतृत्व में एक ऐसा मानचित्र तैयार हुआ, जो अपनापे और आपसदारी के रंगों से आलोकित है।

सात अगस्त... उगते सूरज की खिलती धूप विश्व हिन्दी सचिवालय के प्रांगण में फैल चुकी थी।हल्की ठंडक और नवजात धूप की सुहानी जुगलबन्दी के बीच विश्वरंग शोभायात्रा का रूपक तैयार हो रहा था। हाथों में रंग-बिरंगी ध्वजाएँ और तख़्तियाँ लिए भारत, मॉरीशस, अमेरिका, यू.के., कतर, न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया, सूरीनाम, जापान, यू.ए.ई., दक्षिण कोरिया, केन्या, जर्मनी, साइप्रस, बहरीन, इंडोनेशिया, श्रीलंका, नेपाल, मलेशिया, रूस, नाइजीरिया देशों से पधारे रचनाकारों सहित मॉरीशस के कलाप्रेमी 'विश्वरंग जिन्दाबाद' के नारे लगाते सचिवालय के प्रशस्त पंथ पर क़दम बढ़ा रहे थे।

श्रीलंका की हद में.....आँखों भर आकाश, बाँहों भर संसार... सौहार्द और अपनापे की इस हसरत को अपने दामन में समेटे %विश्वरंग% का कारवाँ सातवीं पायदान तय करने समन्दर किनारे पहुँचा। इठलाती पानीदार लहरों ने उसके पाँव पखारे। बयार के पुरनमझकोरे नेह से भर उठे और आसमान से झरती पावस की बूँदों का संगीत मंगलगान करने लगा।मोती की मानिन्द दमकता एक देश अपनी सरहद में साकार होते हुए महोत्सव की मेज़बानी में मगन था। साहित्य और कलाओं की हमजोली में सारी दुनिया के लिए मनुष्यता का पैग़ाम लिए विश्वरंग भरे-पूरे उत्सव की शक्ल में एकबार फिर चहक उठा। इस दफा यह आवाज़ एशियाई देशों की साझा विरासत को पुरज़ोर करने की ग़रज़ लि एगूँजी।यहाँ हिन्दी की आहटें तो थी हीं, अन्य भाषा और बोलियों के गुम होते जा रहे स्वरों को साध लेने की प्रेमिल पुकार भी थी। 29 सितम्बर की सुबह खिली धूप के उजास में विवेकानंद सांस्कृतिक केन्द्र का परिसर विश्वरंग के स्वागत के लिए आतुर था। सिंहली संस्कृति के लोकरंगों से लदकद नर्तकों का दल अपने पारम्परिक वाद्यों कीलय-ताल पर थिरक रहा था और इन ख़ुशनुमा पलों में विश्वरंग की भारतीय टीम का उद्घोष ''विश्वरंग आयाहै, विश्वास के नए रंग लाया है÷। विश्वरंग की यह शोभायात्रा नयी उमंग, नई तरंग लिए प्रेम के प्रशस्त पथ पर चल पड़ी।

माधुरी रामधारी ने 'विश्वरंग' को बड़ी उपलब्धि बताते हुए कृतज्ञ भाव से कहा कि वह बहुत ही शुभ घड़ी रही होगी, जब संतोष चौबे के मन में विश्वरंग का विचार आया होगा। भोपाल से हिन्दी की शुरू हुई यात्रा आज महासागर के देश मॉरीशस तक पहुँच गई है और यह काम सिर्फ़ बहुत बड़ा दिल वाले चौबेजी ही कर सकते हैं।

नंदिनी सिंगला, भारतीय उच्चायुक्त, मॉरीशस ने कहा कि विश्वरंग के लिए मॉरीशस से अच्छा स्थान कहीं भी नहीं हो सकता, क्योंकि हमारी साहित्य, कला, संस्कृति हिन्दी के केन्द्र में है।

भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद के पूर्व अध्यक्ष विनय सहस्त्रबुद्धे ने कहा कि हिन्दी मनुष्यता की तरफ़ देखने का नज़रिया है। हम हिन्दी को समृद्ध कर तेहैं, तो सांस्कृतिक और भाषिक जनतंत्र को जीवन्त रख पाएँगे।

विश्वरंग के सहनिदेश सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने कहा कि कला-संस्कृति और साहित्य जीवन की शक्ति है। केन्द्रीय संस्कृति तथा पर्यटन मंत्री भारत सरकार गजेंद्रसिंह शेखावत का वीडियो संदेश प्रस्तुत किया गया। समारोह का संचालन विनय उपाध्याय, निदेशक, टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र ने किया।

मुंबई में महका महोत्सव- विश्व रंग 2025 आरंभ मुंबई का भव्य शुभारंभ विश्व रंग फाउंडेशन, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल एवं हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय परिसर में स्थित ग्रीन टेक्नोलॉजी सभागार में भव्यता से आयोजित किया गया। शुभारंभ मंगलाचरण से करते हुए सुरुचि मोहता, सुप्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका द्वारा मुंबई ने ग्राम देवता सिद्धि विनायक की स्तुति में बहुत ही सुंदर भजन प्रस्तुत किया। उन्होंने तुलसीदास रचित पद 'सदा सदा मैं शरण तिहारो, तुम हो गरीबनवाज, रघुवर तुमको मेरी लाज' की मनमोहक प्रस्तुति के साथ ही महात्मा गांधी के प्रिय भजन वैष्णव जन तो तेने कहिये, पीर पराई जाणे रे, की मधुर प्रस्तुति जगत कल्याण और वैश्विक सद्भावना को केंद्र में रखते हुए दी।

मुख्य अतिथि डॉ. विनय सहस्त्रबुद्धे, पूर्व अध्यक्ष, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, भारत सरकार तथा प्रख्यात चिंतक ने अपने उद्बोधन का शुभारंभ मराठी भाषा में करते हुए कहा कि 'भारतीय भाषाओं में परस्परता और समन्वय' वर्तमान की सबसे महत्वपूर्ण जरूरत हैं। हमारी सभी भाषाएँ हमारी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम हैं। सभी को सम्मान देना जरूरी हैं।

संतोष चौबे, निदेशक- विश्व रंग एवं कुलाधिपति- रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालयने समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि यह गर्व का विषय है कि 'विश्वरंग' टैगोर अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव के माध्यम से रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल ने संपूर्ण विश्व के भारतीय भाषा प्रेमियों, कलाकारों एवं साहित्य प्रेमियों को एक स्थान पर लाने का अभूतपूर्व सार्थक प्रयास किया है। विश्व रंग की अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों में 65 से अधिक देशों के सैकड़ों रचनाकारों एवं हजारों लोगों ने रचनात्मक उपस्थिति दर्ज कराकर इसे अविस्मरणीय बनाया है।

रंगों में जगमग टैगोर की विरासत

समकालीन चित्रकला में रबीन्द्रनाथ टैगोर रबीन्द्रनाथ टैगोर की 'आधुनिकता', चित्रकला को देवालयों और राजमहलों तक सीमित दर्शकों के दायरे से बाहर निकालकर, एक व्यापक लोकतान्त्रिक परिसर में ले आने का प्रयास है। इसकी प्रासंगिकता को एक नए सिरे से समझने की जरूरत है।

अशोक भौमिक

टैगोर के नाम अलंकृत 'विश्वरंग' की कला गतिविधियाँ गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर की कला-दृष्टि द्वारा संचालित करने का प्रयास हैं। हमारी कोशिश है कि एक ओर जहाँ चित्रकारों की 'रचने' की स्वतंत्रता पर बात हो, वहीं कला दर्शकों की 'देखने' की स्वतंत्रता का भी ध्यान रखा जाए। रबीन्द्रनाथ टैगोर, चित्रों के देखने की प्रक्रिया को 'समझने' के प्रयास से दूर उसे 'अनुभव' करने पर जोर देते रहे। साथ ही इस प्रक्रिया में चित्रों की अकादमिक, दार्शनिक और बौद्धिक व्याख्याएँ बाधक न बनें, इसका भी आग्रह करते हैं। आज, साहित्य और चित्रकला के अन्तर्सम्बन्धों को समझने से ज्यादा जरूरी उनकी विशेषताओं, सीमाओं और अंतरों को चिह्नित करना है।

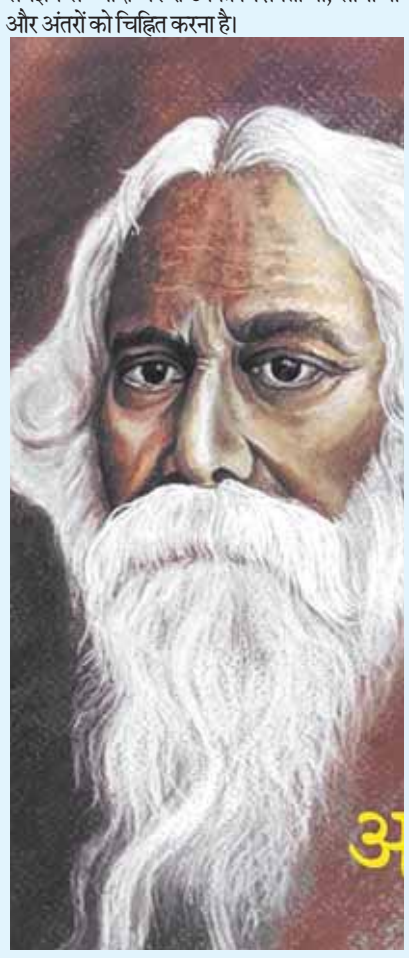

समकालीन चित्रकला में रबीन्द्रनाथ टैगोर रबीन्द्रनाथ टैगोर की 'आधुनिकता', चित्रकला को देवालयों और राजमहलों तक सीमित दर्शकों के दायरे से बाहर निकालकर, एक व्यापक लोकतान्त्रिक परिसर में ले आने का प्रयास है। इसकी प्रासंगिकता को एक नए सिरे से समझने की जरूरत है।

हम सब जानते हैं कि लगभग सत्तर साल की उम्र में रबीन्द्रनाथ टैगोर ने पूरी तन्मयता के साथ चित्रकला के प्रति अपने को समर्पित कर दिया था। भारत में, लम्बे समय तक लोगों ने रबीन्द्रनाथ टैगोर की कला को उनकी रचनात्मकता का महज एक विस्तार माना था लेकिन वक्त् गुजरने के साथ- साथ उनकी कला पर गंभीरता से बातचीत की शुरुआत हुई और उन्हें एक स्वतंत्र चित्रकार के रूप में स्वीकृति मिली। 2019 में टैगोर की चित्रकला पर गंभीर अध्ययन के लिए विश्वविद्यालय की ओर से 'टैगोर फ़ेलोशिप' की शुरुआत की गई और जिसके चलते पहले विश्वरंग के अवसर पर टैगोर की चित्रकला पर एक भव्य प्रकाशन भी संभव हो सका। इस पुस्तक में न केवल टैगोर के लगभग एक सौ चित्र शामिल हैं, बल्कि साथ ही एक स्वतंत्र चित्रकार के रूप में टैगोर के महत्त्व को रेखांकित करते हुए दो शोधपरक लेख भी इसका हिस्सा हैं। टैगोर की चित्रकला पर केंद्रित और अब तक हिंदी में प्रकाशित पुस्तकों में इस प्रकाशन का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है।

भारतीय चित्रकला इतिहास में टैगोर की चित्रकला के महत्त्व को रेखांकित करने के उद्देश्य से रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में एक दिवसीय 'प्रथम टैगोर राष्ट्रीय कला गोष्ठी-2019' का आयोजन किया गया जिसमें देश के विभिन्न शहरों से लगभग दो सौ चित्रकारों, कला शोधार्थियों ने भाग लिया था। इस गोष्ठी में पहली बार भारतीय आधुनिक चित्रकला के इतिहास (1850-2019) को एक नए परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास किया गया और विशेष रूप से 1931-1941 के काल-खंड में रबीन्द्रनाथ टैगोर और अमृता शेरगिल के योगदान की समीक्षा प्रस्तुत की गई।

इसी श्रृंखला में, विश्वरंग 2019 के अवसर पर 'वार्षिक टैगोर राष्ट्रीय चित्रकला प्रदर्शनी' की शुरुआत की गई थी। इस राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी का मूल उद्देश्य देश के विभिन्न छोटे- बड़े साधनहीन इलाकों के युवा कलाकारों को एक राष्ट्रीय मंच प्रदान करना है और आज तक अपने नियमित वार्षिक कला आयोजनों के माध्यम से भारत के सभी प्रदेशों के कई हजार कलाकारों को अपने साथ जोड़ने में हम सफल रहे हैं।

हम सब जानते हैं कि लगभग सत्तर साल की उम्र में रबीन्द्रनाथ टैगोर ने पूरी तन्मयता के साथ चित्रकला के प्रति अपने को समर्पित कर दिया था। भारत में, लम्बे समय तक लोगों ने रबीन्द्रनाथ टैगोर की कला को उनकी रचनात्मकता का महज एक विस्तार माना था लेकिन वक़्त गुजरने के साथ- साथ उनकी कला पर गंभीरता से बातचीत की शुरुआत हुई और उन्हें एक स्वतंत्र चित्रकार के रूप में स्वीकृति मिली। 2019 में टैगोर की चित्रकला पर गंभीर अध्ययन के लिए विश्वविद्यालय की ओर से 'टैगोर फ़ेलोशिप' की शुरुआत की गई और जिसके चलते पहले विश्वरंग के अवसर पर टैगोर की चित्रकला पर एक भव्य प्रकाशन भी संभव हो सका। इस पुस्तक में न केवल टैगोर के लगभग एक सौ चित्र शामिल हैं, बल्कि साथ ही एक स्वतंत्र चित्रकार के रूप में टैगोर के महत्त्व को रेखांकित करते हुए दो शोधपरक लेख भी इसका हिस्सा हैं। टैगोर की चित्रकला पर केंद्रित और अब तक हिंदी में प्रकाशित पुस्तकों में इस प्रकाशन का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है।

रबीन्द्रनाथ टैगोर के आदर्शों पर चलते हुए हमने अपनी कला गतिविधियों को विशेष रूप से छोटे- छोटे कस्बों और शहरों के चित्रकारों पर केंद्रित किया है। साथ ही युवा महिला चित्रकारों और शोधार्थियों को सामने लाने की कोशिश भी की है। हर वर्ष विश्वविद्यालय द्वारा विश्वरंग के अवसर पर 'टैगोर राष्ट्रीय कला गोष्ठी' का नियमित आयोजन भी किया जाता रहा है और 'भारतीय चित्रकला का नारी परिप्रेक्ष्य', 'भारतीय चित्रकला में अमूर्तन' जैसे अब तक अछूते रहे विषयों पर कई विचारोत्तेजक गोष्ठियों का भी आयोजन किया गया है। इन सभी गोष्ठियों में प्रस्तुत शोध-पत्रों को संकलित-संपादित कर उनका प्रकाशन भी किया गया है।

भारत के प्रतिष्ठित चित्रकारों के साथ ही ऐसे अनेक प्रतिभावान लेकिन अब तक उपेक्षित रहे चित्रकारों के जीवन और कला पर हिंदी में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के प्रकाशन की अत्यंत महत्त्वपूर्ण योजना की शुरुआत की गयी है। 'टैगोर मोनोग्राफ शृंखला' के अंतर्गत देश के प्रमुख कला समीक्षकों और इतिहासकारों द्वारा प्रस्तुत चित्रकार ए रामचन्द्रन, बीरेश्वर भट्टाचार्य, अफ़ज़ल, सुधीर पटवर्धन के साथ- साथ अठारहवीं सदी के गुलेर के चित्रकार नैनसुख पर केन्द्रित प्रकाशन किया जा चुका है। इस कड़ी में चित्रकार गुलाम मोहम्मद शेख, रामेश्वर ब्रूटा, और मृणाल कांति दास पर मोनोग्राफ भी शामिल हैं।

संपादकीय

सवालों के घेरे में 'गंभीर'

टेस्ट क्रिकेट में दक्षिण अफ्रीका के साथ स्वदेशी मैदानो पर भारतीय क्रिकेट टीम के दयनीय प्रदर्शन ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं और टीम को कोच गौतम गंभीर की कोचिंग भी संदेह के घेरे में आ गई है। हालांकि गंभीर ने अपनी आलोचनाओं के जवाब में कहा है कि ऐसा करते समय उनकी सफलताओं और उपलब्धियों को नजरअंदाज न किया जाए। भारतीय क्रिकेट टीम द्वारा हाल में चैम्पियंस ट्रॉफी और एशिया कप जीतने, जीतने, भारतीय महिला क्रिकेट टीम द्वारा वन- डे विश्व कप अपने नाम करने और यहां तक कि भारतीय महिला नेत्रहीन क्रिकेट टीम द्वारा भी पहला टी-20 वर्ल्ड कप जीतने की खुशियों के बीच भारतीय पुरूष क्रिकेट टीम की हालिया टेस्ट श्रृंखला में बेहद खराब परफार्मेंस ने क्रिकेट प्रेमियों को निराश कर दिया है। यही हाल रहा तो अगले साल होने वाले टी-20 वर्ल्ड कप में भारतीय टीम से क्या उम्मीद की जाए? जबकि भारत इस कप का डिफेंडिंग चैम्पियन है। वर्तमान टेस्ट श्रृंखला में दक्षिण अफ्रीका के आगे यह टीम बेहद कमजोर नजर आ रही है। घरेलू मैदानो पर इस टेस्ट सीरीज में मिली हार के बाद मुख्य कोच गौतम गंभीर को निशाने पर हैं। गुवाहाटी टेस्ट के दौरान जब पहली पारी में ही भारतीय बल्लेबाजी क्रम लड़खड़ा गया था तो सोशल मीडिया पर गंभीर को हटाने की मांग ने जोर पकड़ा था। अब जब टीम दो मैचों की टेस्ट सीरीज 0-2 से गंवा बैठी है तो एक बार फिर गंभीर सबके निशाने पर आ गए हैं। हालांकि कोच गौतम गंभीर ने भी अब इस पर अपनी चुप्पी तोड़ी है और कहा है कि उनके भविष्य पर फैसला भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) करेगा। आलोचना का कारण यह भी है कि विगत 13 महीनो में भारत के घरेलू मैदान पर दूसरी बार किसी विदेशी टीम ने क्लीन स्वीप किया है। इससे पहले अक्तूबर-नवंबर 2024 में न्यूजीलैंड ने भारत को तीन मैचों की टेस्ट सीरीज में 3-0 से हराया था। अब दक्षिण अफ्रीका ने गुवाहाटी टेस्ट 408 रन से जीतकर भारत का दो मैचों की टेस्ट सीरीज में सूपड़ा साफ कर दिया। कोलकाता टेस्ट को दक्षिण अफ्रीका ने 30 रन से अपने नाम किया था। दक्षिण अफ्रीका ने भारत के सामने 549 रन का लक्ष्य रखा था। विश्व टेस्ट चैंपियन ने भारत को दूसरी पारी में 140 रन पर समेट दिया और 408 रन से जीत दर्ज की। हालांकि गंभीर के कोच रहते भारत ने इस साल की शुरुआत में चैंपियंस ट्रॉफी का खिताब जीता था, जबकि इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की सीरीज 2-2 से ड्रॉ कराई थी। लेकिन यह भी सच है कि गंभीर के कोच रहते भारत ने 18 में से 10 टेस्ट गंवाए। दरअसल गंभीर की आलोचना भारतीय क्रिकेट टीम में लगातार बदलाव के कारण हो रही है, विशेषकर लाल गेंद के प्रारूप में अधिक ऑलराउंडर खिलाने पर उनका विशेष ध्यान रहा है, जिस कारण वो आलोचना के केन्द्र में हैं। इस बारे में गंभीर का कहना है कि टेस्ट क्रिकेट खेलने के लिए आपको बेहद तेजतर्रार और प्रतिभाशाली क्रिकेटरों की जरूरत नहीं है। हमें सीमित कौशल वाले मजबूत व्यक्तित्व वाले खिलाड़ियों की ज़रूरत है। वे अच्छे टेस्ट क्रिकेटर बनते हैं। गंभीर का मानना है कि खराब प्रदर्शन के लिए केवल खिलाड़ियों और कोच पर निशाना साधने से कुछ नहीं होगा। यह टीम में व्यापक बदलाव का समय है। सच्चाई यही है कि हमें लाल गेंद के क्रिकेट में काफी सुधार करना है। बहरहाल खराब प्रदर्शन के लिए केवल गौतम गंभीर को जिम्मेदार ठहराना गलत है। यह पूरी टीम की जिम्मेदारी है। कहीं न कहीं आपसी तालमेल की कमी है। बेहतर है कि खामियों को बूझकर उसमें सुधार किया जाए।

नजरिया

स्वदेश कुमार

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

कर्नाटक की सियासत में अब डीके रहेंगे या सिद्धारमैया

डीके शिवकुमार राजनीतिक रूप से कर्नाटक में अपनी पकड़ मजबूत करते आ रहे हैं। वे लंबे समय से पार्टी के मुख्य नेतृत्व में सक्रिय रहे हैं और उनकी पकड़ पार्टी के अधिकांश कार्यकर्ताओं व नेताओं के बीच है। ऐसे में उन्होंने मुख्यमंत्री की कुर्सी के मामले में कोई समझौता करने का मन नहीं बनाया। शिवकुमार का मानना है कि उनके अनुभव, जनाधार, और राजनीतिक योगदान के कारण वे इस पद के लिए अधिक योग्य हैं। उन्होंने सीधे तौर पर यह भी संकेत दिया है कि मुख्यमंत्री की कुर्सी से कम पर वे कभी सहमत नहीं होंगे।सिद्धरमैया, जो अभी प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं, वे भी अपनी कुर्सी छोड़ने के मूड में नहीं दिख रहे हैं। उनकी भी पार्टी में अपनी पकड़ है और वे भी इस पद के लिए पूरी तरह तैयार हैं। सिद्धरमैया के समर्थक भी उनकी सरकार को लेकर पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं और किसी भी तरह की बगावत को पार्टी हित के खिलाफ मानते हैं। इसलिए उनके लिए यह कुर्सी छोड़ना कोई आसान फैसला नहीं है।इस बीच, पार्टी के आलाकमान के लिए स्थिति काफी पेचीदा हो गई है। दोनों नेताओं के बीच हो रहे इस टकराव ने कांग्रेस के रणनीतिक कमजोरियों को उजागर कर दिया है।

कर्नाटक की राजनीति में इस समय एक बड़ा राजनीतिक घमासान चल रहा है, जिसका केन्द्र बिंदु उप मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार और मुख्यमंत्री सिद्धरमैया के बीच मुख्यमंत्री की कुर्सी को लेकर टकराव है। दोनों के बीच विवाद इतना गहरा हो गया है कि जिससे पार्टी के अंदर मतभेद साफ नज़र आने लगे हैं। कांग्रेस पार्टी के लिए यह परिस्थिति चुनौतीपूर्ण बन गई है क्योंकि दोनों नेताओं की महत्त्वाकांक्षाएं और राजनीतिक दबाव पार्टी की लाइन के खिलाफ जाकर संकट उत्पन्न कर रहे हैं। डीके शिवकुमार राजनीतिक रूप से कर्नाटक में अपनी पकड़ मजबूत करते आ रहे हैं। वे लंबे समय से पार्टी के मुख्य नेतृत्व में सक्रिय रहे हैं और उनकी पकड़ पार्टी के अधिकांश कार्यकर्ताओं व नेताओं के बीच है। ऐसे में उन्होंने मुख्यमंत्री की कुर्सी के मामले में कोई समझौता करने का मन नहीं बनाया। शिवकुमार का मानना है कि उनके अनुभव, जनाधार, और राजनीतिक योगदान के कारण वे इस पद के लिए अधिक योग्य हैं। उन्होंने सीधे तौर पर यह भी संकेत दिया है कि मुख्यमंत्री की कुर्सी से कम पर वे कभी सहमत नहीं होंगे।सिद्धरमैया, जो अभी प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं, वे भी अपनी कुर्सी छोड़ने के मूड में नहीं दिख रहे हैं। उनकी भी पार्टी में अपनी पकड़ है और वे भी इस पद के लिए पूरी तरह तैयार हैं। सिद्धरमैया के समर्थक भी उनकी सरकार को लेकर पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं और किसी भी तरह की बगावत को पार्टी हित के खिलाफ मानते हैं। इसलिए उनके लिए यह कुर्सी छोड़ना कोई आसान फैसला नहीं है।इस बीच, पार्टी के आलाकमान के लिए स्थिति काफी पेचीदा हो गई है। दोनों नेताओं के बीच हो रहे इस टकराव ने कांग्रेस के रणनीतिक कमजोरियों को उजागर कर दिया है। बगावत इतनी बढ़ चुकी है कि अगर पार्टी नेतृत्व समय पर सही और संतुलित निर्णय नहीं लेता है तो इसका असर विधानसभा चुनावों पर भी पड़ सकता है। खासकर जब पार्टी को कर्नाटक में अपनी पकड़ और संगठन को मजबूत करने की जरूरत है।

कुछ राजनीतिक विश्लेषकों की राय में अगर कर्नाटक कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी इस विवाद को शांति से नहीं सुलझाते हैं, तो पार्टी को भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है। यह टकराव आज केवल मुख्यमंत्री पद का नहीं रहा, बल्कि दोनों के समर्थक भी अलग-अलग मोर्चे पर खड़े हो गए हैं। बताया जा रहा है कि शिवकुमार के समर्थक तो यहां तक कि बीजेपी से भी संपर्क करने में गुरेज नहीं

कर रहे, जो कांग्रेस पार्टी के लिए चिंताजनक स्थिति है। यह संकेत है कि अगर पार्टी आलाकमान ने समय रहते स्पष्ट निर्देश या मध्यस्थता नहीं की, तो शिवकुमार के नेतृत्व में पार्टी के भीतर अलगाव या विघटन की संभावना भी जताई जा रही है।पार्टी नेतृत्व ने फिलहाल इस मामले में चुप्पी साध रखी है, लेकिन खबरों के अनुसार राहुल गांधी ने पक्षों की बात सुननी शुरू कर दी है। इसके बाद ही कोई अंतिम निर्णय लिया जाएगा। परंतु इधर दोनों पक्षों के खेमे भी अपनी-अपनी दलीलों को पार्टी अध्यक्ष तक पहुँचा चुके हैं। दोनों ओर से इसकी उम्मीद जताई जा रही है कि जो भी फैसला आएगा, वह उनके लिए स्वीकार्य होगा। लेकिन राजनीतिक धरातल पर देखा जाए तो ऐसा होना मुश्किल लगता है क्योंकि दोनों नेताओं की महत्वाकांक्षाएं इतनी मजबूत हैं कि वे दोनों ही कम समझौता करने को तैयार नहीं हैं।इस विवाद की वजह से कांग्रेस पार्टी के अंदर सशक्त नेतृत्व की कमी उजागर हो रही है। ऐसी स्थिति में पार्टी के लिए जरूरी होगा कि वह जल्द से जल्द इस मुद्दे का समाधान निकाले ताकि आगे बढ़कर चुनाव तैयारी और संगठन के विस्तार पर ध्यान केंद्रित किया जा सके। यदि लंबे समय तक यह विवाद बना रहा तो इससे पार्टी के कार्यकर्ता भी निराश हो सकते हैं और विरोधी दलों को भी यह मौका मिलेगा कि वे इसका राजनीतिक लाभ उठाएं।

यह मुद्दा कर्नाटक की राजनीति में भी हलचल मचा रहा है। विपक्षी दल इसे कांग्रेस में अंदरुनी फूट के रूप में दिखा रहे हैं और अपनी ताकत बताने का मौका तलाश रहे हैं। यदि कांग्रेस ने इस विवाद को संभाला नहीं तो कर्नाटक में उसकी सरकार खतरे में पड़ सकती है। ऐसे हालात में पार्टी नेतृत्व के सामने चुनौती यह है कि वे दोनों प्रमुख नेताओं के बीच सामंजस्य बनाएं और पार्टी की एकजुटता को बनाये रखें। राजनीतिक जमावट और नेताओं के बीच सत्ता की होड़ ऐसी स्थिति उत्पन्न कर रही है कि कांग्रेस के लिए समय रहते सही निर्णय लेना बेहद जरूरी हो गया है।कर्नाटक की राजनीति में मुख्यमंत्री की कुर्सी के लिए यह लड़ाई अब केवल पद की नहीं बल्कि भविष्य की दिशा तय करने वाली भी हो गई है। पार्टी आलाकमान की भूमिका इस मामले में निर्णायक साबित होगी और राहुल गांधी की मंशा पर सभी की नजरें टिकी हैं। अभी यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि राहुल गांधी किस तरह का निर्णय लेंगे और वह कैसे दोनों पक्षों को संतुष्ट करेंगे। लेकिन इतना तय है कि कांग्रेस के लिए अब यह मामला केवल नेतृत्व का नहीं, बल्कि समूचे संगठन की स्थिरता का प्रश्न बन चुका है। प्रदेश की राजनीति में जो भी हो, उसका असर राष्ट्रीय स्तर पर भी देखे जाने की संभावना है, क्योंकि कर्नाटक हमेशा से कांग्रेस की महत्वपूर्ण राजनीतिक जंग का मैदान रहा है।इस समय कांग्रेस नेतृत्व के लिए सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वह गणना से काम लेकर विवाद को जल्द से जल्द समाप्त कराए। तभी पार्टी अपनी राजनीतिक प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित कर सकेगी और आगामी चुनावों में बेहतर स्थिति में नजर आएगी।

राम मंदिर पर भगवा पताका

जयदेव राठी

लेखक एडवोकेट हैं।

पहचान, आस्था और भारतीय पुनर्जागरण

अयोध्या की पावन धरती पर श्रीराम मंदिर के शिखर पर धर्म ध्वजा का फहराना केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का प्रतीक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों संपन्न यह ऐतिहासिक कार्य उन करोड़ों भारतीयों की आस्था और धैर्य का प्रतिफल है, जिन्होंने पीढ़ियों तक इस सपने को अपने हृदय में संजोए रखा। हिंदू शास्त्रों में मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण को अत्यंत पवित्र और महत्वपूर्ण माना गया है। आगम शास्त्रों के अनुसार, ध्वज मंदिर की आत्मा है और यह देवता की उपस्थिति का प्रत्यक्ष प्रतीक माना जाता है। वास्तु शास्त्र में उल्लेख है कि जब तक मंदिर के शिखर पर ध्वज नहीं फहराया जाता, तब तक मंदिर का निर्माण अधूरा माना जाता है। धर्म ध्वजा को 'ध्वज स्तंभ' या 'गरुड़ ध्वज' भी कहा जाता है। यह केवल एक कपड़े का टुकड़ा नहीं, बल्कि दिव्य शक्ति का वाहक है। प्राचीन परंपरा के अनुसार, ध्वज के फहराने से मंदिर में देवता का आवाहन पूर्ण होता है और वह स्थान दिव्य ऊर्जा से परिपूर्ण हो जाता है।

राम मंदिर के शिखर पर फहराई गई धर्म ध्वजा का निर्माण विशेष रूप से पारंपरिक विधियों का पालन करते हुए किया गया है। ध्वज का प्रतीकात्मक अर्थ यह ध्वज़ भगवा रंग में है, जो हिंदू और विशेष रूप से राम परम्परा में त्याग, उत्साह, बलिदान और आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है। ध्वज पर सूर्य, और कोविदार वृक्ष जैसे प्रतीक अंकित हैं। सूर्य सूर्यवंशी राम का प्रतीक, दिव्यता, प्रकाश और ऊर्जा। आध्यात्मिक मूल, ब्रह्मांडीय ध्वनि, धर्म और शांति का संकेत। कोविदार वृक्ष ? जीवन, समृद्धि, प्रकृति की निरंतरता, और संभवतः धार्मिक इतिहास से जुड़ा एक प्राचीन प्रतीक।

पीएम मोदी ने इस ध्वज की 13 अलग-अलग अर्थों की व्याख्या की है, जिसमें 'संकल्प, सफलता, आदर्श, सामाजिक सद्भाव' शामिल हैं। उन्होंने कहा कि यह ध्वज 'भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण' का ध्वज है। जो हिंदू धर्म में त्याग, साहस और धर्म का प्रतीक माना जाता है। ध्वज पर श्रीराम से संबंधित पवित्र प्रतीक अंकित हैं। ध्वज का आकार और माप भी वास्तु शास्त्र के अनुसार निर्धारित किया गया है। 161 फीट ऊंचे मंदिर के शिखर पर स्थापित यह ध्वज दूर से ही दिखाई देता है। इसे इस प्रकार डिजाइन किया गया है कि यह विभिन्न मौसमों और मौसमी परिस्थितियों में भी सुरक्षित रहे।

धर्म ध्वजा के अनावरण के लिए विद्वान ज्योतिषाचार्यों द्वारा विशेष शुभ मुहूर्त का चयन किया गया था। वैदिक पंचांग के अनुसार, यह समय ग्रहों की स्थिति, नक्षत्र और तिथि के आधार पर निर्धारित किया गया। मंदिर निर्माण के विभिन्न चरणों की तरह, ध्वजारोहण के लिए भी ब्रह्म मुहूर्त और देव मुहूर्त का विशेष ध्यान रखा गया।

ध्वजारोहण समारोह पूर्णतः वैदिक विधि-विधान से संपन्न हुआ। सर्वप्रथम गणेश पूजन, नवग्रह पूजन और वास्तु शांति के मंत्रोच्चार किए गए। इसके बाद ध्वज का पंचामृत से अभिषेक किया गया। विद्वान पुरोहितों ने वैदिक मंत्रों के साथ ध्वज में प्राण प्रतिष्ठा की। इस विधि में विशेष मंत्रों के माध्यम से ध्वज को दिव्य ऊर्जा से संपन्न किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विधिवत रूप से ध्वज को शिखर पर फहराया। इस दौरान वैदिक मंत्रोच्चार, शंखनाद, घंटा-घड़ियाल की ध्वनि और वेद पाठ का वातावरण अत्यंत दिव्य हो गया।

प्रधानमंत्री मोदी इस ऐतिहासिक कार्य में प्रत्यक्ष रूप से शामिल हुए। पारंपरिक रीति से ध्वज को अपने हाथों से ऊपर खींचा। इस दौरान उनके चेहरे पर अपार प्रसन्नता और भक्ति भाव स्पष्ट दिखाई दे रहा था। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि यह क्षण केवल वर्तमान पीढ़ी का नहीं, बल्कि उन असंख्य भारतीयों की आस्था का प्रतिफल है जिन्होंने सदियों तक इस दिन का इंतजार किया। जैसे ही धर्म ध्वजा मंदिर के शिखर पर फहराई गई, पूरे अयोध्या नगर में अभूतपूर्व उत्साह और भक्ति का वातावरण बन गया। लाखों श्रद्धालुओं ने एक साथ जय श्री राम के नारे लगाए। मंदिर परिसर में उपस्थित संतों, महंतों और आचार्यों ने वैदिक मंत्रोच्चार किया। सरयू नदी के तट पर, राम की पैड़ी पर, हनुमानगढ़ी में और अयोध्या के प्रत्येक कोने से घंटा-घड़ियाल की ध्वनि और शंखनाद सुनाई दिया।

ध्वज का धार्मिक महत्व शास्त्रों में कहा गया है - ÷ध्वजो देवस्य चिह्नं स्यात्÷ अर्थात ध्वज देवता का चिह्न है। राम मंदिर पर फहराई गई यह ध्वजा न केवल मर्यादा पुरुषोत्तम राम की उपस्थिति का प्रतीक है, बल्कि यह धर्म, न्याय और सत्य की विजय का भी प्रतीक है। पौराणिक मान्यता के अनुसार, जिस मंदिर में ध्वज फहराता है, वहां देवता सदैव विराजमान रहते हैं। ध्वज की छाया में आने वाले भक्तों के पाप नष्ट होते हैं और उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है। अयोध्या का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना भारतीय सभ्यता का स्वयं। रामायण के अनुसार, यह नगरी मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि रही है। सदियों तक यहाँ भव्य राम मंदिर खड़ा रहा, जो भारतीय संस्कृति का केंद्र था। 1528 में मुगल आक्रांता बाबर के सेनापति मीर बाकी द्वारा मंदिर विध्वंस की घटना भारतीय इतिहास का एक दुखद अध्याय है। इसके बाद के लगभग 500 वर्ष संघर्ष, प्रतीक्षा और आस्था की अग्निपरीक्षा बन गए। 1992 में विवादित ढांचे के विध्वंस के बाद लंबी कानूनी लड़ाई शुरू हुई, जो 2019 में सर्वोच्च न्यायालय के ऐतिहासिक फैसले के साथ समाप्त हुई। 2020 में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा भूमि पुजन के साथ मंदिर निर्माण की शुरुआत हुई। नागर शैली की स्थापत्य कला में निर्मित यह भव्य मंदिर न केवल धार्मिक महत्व रखता है, बल्कि भारतीय शिल्पकला का उत्कृष्ट नमूना भी है।

राजस्थान के गुलाबी बलुआ पत्थर से बना यह मंदिर 360 फीट लंबा, 235 फीट चौड़ा और 161 फीट ऊंचा है। मंदिर के निर्माण में देश भर के हजारों कारीगरों, शिल्पकारों और मजदूरों ने अपना योगदान दिया। राम मंदिर का निर्माण भारतीय समाज के लिए आत्मसम्मान और सांस्कृतिक पहचान का प्रश्न था। यह केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक बन गया। सदियों के औपनिवेशिक और विदेशी शासन के बाद, यह स्वतंत्र भारत की सांस्कृतिक पुनर्स्थापना का संकेत है। इस मुद्दे ने भारतीय राजनीति को भी गहराई से प्रभावित किया, लेकिन अंततः न्यायपालिका के निर्णय ने इसे संवैधानिक समाधान की दिशा में ले गया। ध्वजारोहण के अवसर पर अयोध्या में लाखों की संख्या में श्रद्धालु उपस्थित हुए। देश के कोने-कोने से, विदेशों से भी भक्तगण इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बनने पहुंचे। कई श्रद्धालुओं की आंखों में खुशी के आंसू थे, जो पीढ़ियों की प्रतीक्षा के बाद इस दिव्य दृश्य को देख पा रहे थे। विभिन्न आध्यात्मिक संगठनों, संत समाज और धार्मिक संस्थाओं ने विशेष भजन-कीर्तन और सत्संग का आयोजन किया।

राम मंदिर अयोध्या को एक प्रमुख धार्मिक पर्यटन केंद्र बना रहा है। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल मिला है और रोजगार के नए अवसर सृजित हुए हैं। होटल, परिवहन, हस्तशिल्प और अन्य क्षेत्रों में व्यापक विकास देखा जा रहा है। विश्व भर में फैले भारतीय प्रवासियों के लिए यह क्षण विशेष गर्व का है। यह दर्शाता है कि प्राचीन सभ्यताएं अपनी जड़ों से जुड़कर आधुनिक युग में भी प्रासंगिक बनी रह सकती हैं। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के साथ कुछ दायित्व भी आते हैं। समाज को यह सुनिश्चित करना होगा कि यह मंदिर सांप्रदायिक सौहार्द और भाईचारे का केंद्र बने। श्रीराम मंदिर पर धर्म ध्वजा का फहराना भारतीय इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है। यह न केवल धार्मिक आस्था की विजय है, बल्कि लोकतांत्रिक और संवैधानिक व्यवस्था में विश्वास का प्रमाण भी है। 500 वर्षों की प्रतीक्षा के बाद यह क्षण भारतीय समाज के धैर्य, संयम और न्याय में विश्वास की पुष्टि करता है।

धर्म ध्वजा का फहराना केवल एक अनुष्ठान नहीं था, बल्कि यह करोड़ों भारतीयों की आस्था का शिखर था। जब ध्वज ने हवा में लहराना शुरू किया, तो ऐसा लगा मानो स्वयं भगवान राम अपने भक्तों को आशीर्वाद दे रहे हों। राम मंदिर केवल पत्थरों की संरचना नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का प्रतीक है। यह अतीत का गौरव, वर्तमान की उपलब्धि और भविष्य की आशा का संगम है। धर्म ध्वजा के शिखर पर लहराने के साथ, यह मंदिर पूर्णता को प्राप्त हुआ और अब यह सदियों तक भारतीय संस्कृति, धर्म और आस्था का प्रतीक बना रहेगा।

किस कीमत पर विकास ?

मुद्दा

संध्या अग्रवाल

सामाजिक मुद्दों पर लेखन

विकास–एक ऐसा शब्द जिसने सदियों से मानव को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। पर आज यह शब्द ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहाँ हमें ठहरकर यह प्रश्न पूछना होगा–हम आखिर किस दिशा में बढ़ रहे हैं? और क्या इस विकास की कोई कीमत नहीं है?

जब भी हम विकास की बात करते हैं, उसके साथ हम 'मानव' शब्द जोड़ना भूल जाते हैं। नतीजा यह है कि मशीनें तेज़ हो गईं, पर मनुष्य थक गया। इमारतें ऊँची हो गईं, पर ज़मीन कमजोर पड़ गई। सुविधाएँ बढ़ गईं, पर संवेदनाएँ कम होती जा रही हैं।

आज गर्मियाँ सिर्फ मौसम नहीं, चेतावनी बन चुकी हैं। हवा में धुआँ है, पानी में जहर है, और धरती अपने भीतर से कराह रही है। नदियाँ सूख चुकी हैं, पहाड़ टूट रहे हैं, जंगल राख हो रहे हैं–और हम गर्व से कह रहे हैं कि हम 'विकसित' हो रहे हैं।

हमने प्रकृति को 'संसाधन' मान लिया–मानो वह सिर्फ उपयोग की वस्तु हो। पर प्रकृति माँ है। वह देती है, पर सहती भी है। और जब उसकी सहनशीलता खत्म होती है, तब सामने आती है–हीटवेव, बाढ़, सूखा, महामारी

सबसे दुखद यह है कि इस विनाश की मार उन लोगों पर सबसे पहले पड़ती है जिनकी आवाज़ सबसे कमजोर है–गाँव, किसान, मजदूर, बुजुर्ग, बच्चे।

विकास का मतलब यह नहीं कि हम हरियाली की कीमत पर कंक्रीट बिछाएँ। सड़कें ज़रूरी हैं, पर पेड़ भी। मॉल ज़रूरी हैं, पर हवा ज्यादा ज़रूरी। कारें बढ़ेंगी, पर क्या साँसें बचेंगी?

हमारा असली विकास तब होगा जब आने वाली पीढ़ियाँ हमें धन्यवाद कहें–न कि सवाल पूछें कि ÷आपने हमें कैसी धरती दी? अब समय है प्रकृति और विकास के बीच संतुलन बनाने का। पेड़ काटने से पहले एक पेड़ लगाएँ। पानी खर्च करने से पहले एक बूंद बचाएँ।

प्लास्टिक फेंकने से पहले उसे कम करने का संकल्प लें। सच्चा विकास वही है जहाँ मनुष्य भी आगे बढ़े और धरती भी सुरक्षित रहे।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा अग्निबाण पब्लिकेशन, 121, देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

जवाहर चौधरी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

नए महात्मा पुराना संदेश

देखो भई, कायदा तो ये है कि जब चुनाव सिर पर हों तो सत्य-अहिंसा जैसे गांधीवादी विचारों को सफ़ेद कपड़े में बांध कर टांड़ पर सरका देना चाहिए। यही समझ में नहीं आता है कि पार्टी जब नए गरम खून और युवा टाइप शक्ति को आगे लाना चाहती है तो बीच में फच्चर मारने सत्य-अहिंसा कहाँ से आ जाता है !! अब तुम बताओ टिकिट कि कित्ती तो मारा मारी मची है पार्टी में। बायोडाटा में एक सच के साथ हजार झूठ लिखना पड़ रहे हैं। और साथ में सौ चक्कूधारी रोबोट नहीं हों तो पोलटिक्स में 'युवा हिरदे समराट' बनने की बात तो दूर आदमी किसी से कुत्ता छाप मूजोरी भी नहीं कर सकता है। अगर सत्य-अहिंसा का बाजा बजाएँगे तो दूसरी पार्टी वाले सिर पे नाचेंगे। चुनाव लड़ना अंग्रेज़ भगाना नहीं है, ये बात हाईकमान को समझना पड़ेगी। पार्टी कार्यालय में टिकिट के लिए संघर्षरत युवा हृदय सम्राट पिन्ना रहे थे। दरअसल हाईकामन के दफ्तर से अभी अभी एक आदेश आया है कि वोट चोरी बम फटा नहीं इसलिए सत्य-अहिंसा को लेकर जितना भी प्रचार प्रसार कर सकती हो पार्टी करे। पोस्टर हों, डिबेट हो, चर्चा भाषण हों, बयान-तूफान-धमाल जो भी संभव हो किए जाएँ। जरूरत समझें तो दारू भी 'सत्य-अहिंसा छाप' बँटवा दें। जब दूसरी पार्टियों के मुख में असत्य और आचरण में हिंसा हो तो सत्य-अहिंसा हमारी पार्टी के एक्शन की मेन लाइन होना चाहिए।

पंडिजी नाम से पुकारे जाने वाले पार्टी के बुजुर्ग नेता बोले -देखो यार, मैं समझता हूँ आपकी चिंता। लेकिन ज्यादा लोड लेने की जरूरत नहीं है। सत्य-अहिंसा हमारी पार्टी के आजमाए हुए जुमले हैं। जुमले समझते हो ना ? जुमले को पूरा देश समझता है अब। जुमले आज कि राजनीति का शुगर कोटेड सच है। राजनीति के सत्य और डिक्शनरी के सत्य में जमीन आसमान का अंतर होता है। राजनीति का सत्य वह सत्य है जिसे जानते सब हैं लेकिन बताता कोई नहीं है और डिक्शनरी का सत्य बताते सब हैं पर जनता कोई नहीं है। ..... पार्टी जब सत्य-अहिंसा के मार्ग पर चलने को कह रही है तो इसे राजनीतिक तौर से समझने कि जरूरत है महात्मा गांधी के बताए अर्थ से नहीं।.... गांधी एक राजनीतिक देवता हैं जिनकी सब पूजा करते हैं। हमें ध्यान रखना चाहिए कि गांधी सिर्फ एक मूर्ति हैं विचार नहीं। जो विचारों से परहेज करते हैं वे लंबी पूजा करते हैं। देवता भी पूजा ही पसंद करते हैं प्रपंच नहीं। इसलिए महात्मा गांधी सैद्धांतिक रूप से हमारे मार्गदर्शक हैं, भले ही हम किसी भी रास्ते पर चल रहे हों।

ये क्या के रये हो पंडीजी ! जिसका डर था वोई हो गया क्या !! अब्बी तो उन्होंने कैलास मानसरोवर की यात्रा करी ! और अब्बी महात्मा भी हो गए फटाफट !! ताक में बैठी सामने वाली पार्टी तो चट्ट से खेंच लेगी और उनको यूपी का मुख्य मंत्री बना देगी दन्न से और सारा मामला देखते देखते भूतपूर्व हो जाएगा।

अरे यार युवा हिरदे जी जरा ब्रेक भी लगाया करो। कभी बापू का नाम नहीं सुने हो क्या ? .... ना ना .... और किसी बापू का नाम मत लेना, अपने वाले बापू जो हजार के नोटों पर छपते हैं, वही।

हजार के नोट !!! कब छपे !

अरे नोट पाँच सौ का हो या हजार का, छपते तो अपने महात्मा गांधी ही हैं। महात्मा मतलब पुराने वाले गांधी।

पंडीजी अपनी पार्टी में कनफुजन भोत है। पुराने महात्मा, नए महात्मा ! येई समझ में नई आता कि फॉलो किस्को करें, साला ओरिजनल कौन है !

राजनीति में समय का बड़ा महत्व है। इस वक्त जो भी गांधी है वही पार्टी का मुकद्दर है। मजबूरी में प्लास्टिक महात्मा ही असली महात्मा है। जो ओरिजनल महात्मा है वो सबके पर्स में तो होता है लेकिन सोच में नहीं होता है। ओरिजनल महात्मा जेब में आता है दिल में नहीं आता है समझे। हमारे लिए जो कुर्सी पर है वही असली है, उसी को फॉलो करो।

चलो ठीक है पंडीजी, हमें क्या। हमें तो टिकिट से मतलब, लेकिन इस सत्य और अहिंसा का क्या करें !? कोई रूपरेखा हो, कोई उदाहरण तो हो।

चुनाव का समय है युवा हिरदे समराट, लोगों के गले लगो और आँख मारो दनादन। सुना नहीं क्या कि एक आँख मारूँ तो रास्ता रुक जाए, दूजी आँख मारूँ जमाना झुक जाए दोनों आँख मारूँ तो छोरा-छोरी पट जाए। इसमे सत्य और अहिंसा दोनों कवर हो जाते हैं। नया संदेश यही है।

ट्रैवलॉग चर्चा

ब्रजेश कानूनगो

बुरहानपुर में भी आई है ईरान की प्राचीन कनात जल प्रणाली

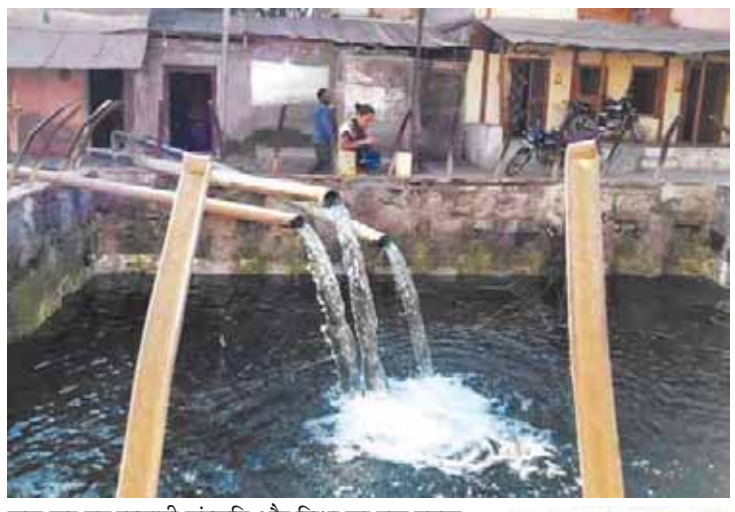

हम सब जानते हैं कि ईरान दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है। भारत और ईरान के संबंध सदियों पुराने और बहुआयामी हैं, जिनमें गहरा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध है।यह सहयोग ऊर्जा, व्यापार, कनेक्टिविटी (जैसे चाबहार बंदरगाह), और क्षेत्रीय स्थिरता जैसे क्षेत्रों में फैला हुआ रहा है। हालाँकि, कुछ राजनीतिक मतभेद और वैश्विक दबावों के कारण संबंधों में चुनौतियाँ भी आई हैं।दोनों देशों में भाषा, कला, वास्तुकला और परंपराओं में कई समानताएं हैं। ईरान भारत के प्रमुख व्यापारिक साझेदारों में से एक रहा है। भारत ईरान को चावल, चाय, चीनी, और दवाइयाँ जैसे उत्पादों का निर्यात करता है। ईरान से भारत को कच्चा तेल, रसायन, फल और मेवे जैसे उत्पादों का आयात होता है। ईरान में चाबहार बंदरगाह का विकास भारत के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीतिक परियोजना है, जो इसे मध्य एशिया और अफगानिस्तान से जोड़ता है। ईरान कभी भारत के लिए कच्चे तेल के महत्वपूर्ण और विश्वसनीय आपूर्तिकर्ताओं में से एक था।अमेरिका द्वारा ईरान पर लगाए गए प्रतिबंधों ने भारत के तेल आयात को प्रभावित किया है। इज़राइल के साथ भारत के बढ़ते संबंधों और कश्मीर जैसे मुद्दों पर ईरान की कुछ प्रतिक्रियाओं ने संबंधों में तनाव भी पैदा किया। हाल ही में, भारत के लिए ईरान की वीजा-फ्री एंट्री सुविधा को निलंबित कर दिया गया है।

इस्लामी क्रांति के बाद ईरान को 1979 में इस्लाम गणराज्य घोषित किया गया था।इससे पहले छठी शताब्दी ईसा पूर्व में साइरस महान ने यहां हख़ामनी साम्राज्य की स्थापना की थी जो इतिहास के सबसे बड़े साम्राज्यों में से एक बना। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व सिकंदर ने इस साम्राज्य को परास्त कर दिया था। यूनानी राज के बाद इस पर पहलवी तथा सासानी साम्राज्यों का राज रहा। अरब मुसलमानों ने सातवीं शताब्दी ईस्वी में इस क्षेत्र पर विजय प्राप्त की और इसका इस्लामीकरण किया। आगे चल कर यह इस्लामी संस्कृति और शिक्षा का एक प्रमुख और महत्वपूर्ण केंद्र बन गया। इसकी कला, साहित्य, दर्शन और वास्तुकला इस्लामी स्वर्ण युग के दौरान इस्लामी देशों में और उससे आगे तक फैलती गई। तुर्क और मंगोल शासन के बाद पंद्रहवीं शताब्दी में ईरान फिर से एकजुट हुआ। उन्नीसवीं सदी तक इसने अपनी काफ़ी ज़मीन खो दी थी। 1953 के तख्तापलट ने शासक मोहम्मद रज़ा पहलवी को और ताकतवर बना दिया जिसने दूरगामी सुधारों की एक श्रृंखला शुरू की थी। आज, ईरान एक इस्लामी गणराज्य तथा धर्मतंत्र है।

तेहरान, इस्फ़हान, तबरेज़, मशहद इत्यादि इसके कुछ प्रमुख शहर हैं। राजधानी तेहरान में देश की 15 प्रतिशत जनता वास करती है। ईरान की अर्थव्यवस्था मुख्यतः तेल और प्राकृतिक गैस निर्यात पर निर्भर है। फ़ारसी यहाँ की मुख्य भाषा है। फ़ारसी लोगों के बाद अज़रबैजानी, कुर्द और लुर यहाँ की सबसे बड़े जातीय समूह हैं।

पिछले दिनों हमने ट्रैवल ब्लॉगर बंशी बिश्नोई के यूट्यूब विडियोज के माध्यम से ईरान की कुछ विशेषताओं को टीवी स्क्रीन पर साक्षात देखने समझने का प्रयास किया।

ईरान एक ऐसा मुल्क है, जहां पर नदियां, तालाब और

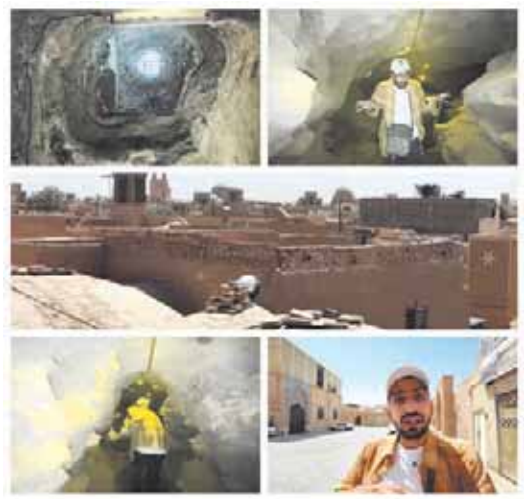

झरने नहीं हैं, मतलब जमीन के ऊपर पानी की बड़ी किल्लत है। लेकिन जमीन के नीचे पानी की कोई कमी नहीं है। एक जानकारी के मुताबिक आज से करीब तीन हजार साल पहले ही ईरानियों ने जमीन से पानी निकालने की तरकीब खोज निकाली थी, जिसकी मदद से ईरान में कई बगीचे पुराने समय से ही लहलहाते रहे। जमीन के अंदर से पानी निकालने की पद्धति ईरान के इस्फान और याज्द समेत कई इलाकों में देखने को मिलती हैं। पानी सप्लाई की इस शानदार इंजीनियरिंग को फारसी भाषा में 'कारिज' कहा जाता हैं, लेकिन इसका अरबी नाम 'कनात' ज्यादा चलन में है। रिपोर्ट के मुताबिक कुछ इलाकों में पहाड़ों की तलहटी से पानी निकालने की पद्धति आज भी चलन में है। साल 2016 में यूनेस्को ने इसे वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शामिल कर लिया है।

बताया जाता है कि कनात बनाने के लिए पहले ऐसे पहाड़ों की पहचान की जाती थी, जहां जमीन के अंदर गाद वाली मिट्टी हो। फिर ऐसी जगहों पर खुदाई करके बेहतरीन इंजीनियरिंग के तहत पानी की निकासी की जाती थी और दूर तक इस पानी को ले जाया जाता था। गहरी खुदाई के दौरान ऑक्सीजन पहुंचाने के लिए भी रास्ते बनाए जाते थे। इसी पद्धति से ठंडी के महीनों में बर्फ भी जमाने का काम किया जाता था, जिससे गर्मी के महीनों में इसका इस्तेमाल किया जा सके. साथ ही कनात के पास वातानुकूलित घर भी बनाए जाते थे, जो गर्मी के महीनों में काफी ठंडा रहते थे।

ट्रैवलर बंशी बिश्नोई ने न सिर्फ ईरान के याज्द शहर में स्थित इन जल संरचनाओं के धरातल पर स्थित बस्तियों,घरों और वास्तुशिल्प से परिचित कराया बल्कि जमीन के तीस, चालीस मीटर नीचे बनाई गई नहरों,जल धाराओं, कूपों, ऑक्सीजन खिड़कियों, वातावरण को ठंडा बनाए रखने और अन्य तकनीकों को भी बहुत सहजता से वीडियो में दिखाया, समझाया। इन ऐतिहासिक संरचनाओं को देखने के लिए अनेक पर्यटकों के अलावा स्थानीय लोग भी बड़ी संख्या में यहां आते हैं। कई तंग सुरंगों में तो बहुत कठिनाई से प्रवेश करना पड़ता है।

बंशी बिश्नोई के ट्रैवलॉग वीडियो देखते हुए हमें बुरहानपुर मध्यप्रदेश की प्राचीन भूमिगत जल प्रणाली का स्मरण सहज ही हो जाता है, जोकि आज भी हमारी धरोहर है और प्रेरित करती है। यह प्रणाली कनात प्रणाली का ही एक उदाहरण है, जिसमें भूमिगत सुरंगों के माध्यम से पानी को लंबी दूरी तक ले जाया जाता है। इसे खूनी भंडारा या कुंडी भंडारा के रूप में जाना जाता है, यह प्रणाली भूमिगत सुरंगों और दीर्घाओं का उपयोग करके सतपुड़ा की पहाड़ियों से भूमिगत झरनों से पानी एकत्र करती है और गुरुत्वाकर्षण के विरुद्ध लगभग 80 फीट की गहराई से बहने वाले पानी की आपूर्ति करती है। इसका निर्माण 1615 ईस्वी के आसपास फारसी भू-वैज्ञानिक की मदद से मुगल सूबेदार अब्दुल रहीम खानखाना के संरक्षण में किया गया था। इस प्रणाली में पानी 101 कुंडलियों में घूमता है और माना जाता है कि, यहां का पानी शुद्धता और स्वच्छता के मामले में मिनरल वाटर से कई गुना बेहतर है। इस भूमिगत जल प्रणाली को देखने बड़ी संख्या में पर्यटक यहां भी यहां आते हैं। खास बात ये है कि, कई लोग तो यहां से पानी भरकर अपने साथ भी ले जाते हैं।

ईरान की कनात भूमिगत जल प्रणाली वहीं जाकर बहुत अच्छे से देखी जा सकती है किंतु ट्रैवलॉग और ट्रैवल वीडियो के माध्यम से हमने इसका थोड़ा अनुभव घर बैठे बंशी बिश्नोई के जरिए ले लिया, आभार है इन ट्यूबर ब्लॉगरों का। जहां तक बुरहानपुर की प्रणाली के दीदार की बात है, वहां जाने का कार्यक्रम तो कभी भी बनाया जा सकता है।

आतंकवाद

डॉ. अंशुल उपाध्याय

लेखिका फॉर्मर यू.जी.सी. सीनियर रिसर्च फैलो (रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन), दिल्ली हैं।

मासूम चेहरों के पीछे क्रूरता और विध्वंस

बदलते परिवेश में मनोवैज्ञानिक तरीके से युवक और युवतियों का धीरे-धीरे ब्रेनवाश करके 15 से 16 वर्ष की आयु तक उन्हें एक ट्रेंड और क्रूर आतंकी बना दिया जाता है। फिर ये मासूम एक ऐसे व्यक्ति बन जाते है जिसका खुद का दिमाग चलना ही बंद हो जाता है। और जो भी उन्हें आदेश या टारगेट दिए जाते हैं वे अपना दिमाग बिना चलाए आंख मूंद कर उन टारगेटों को पूरा करने के लिए निकल जाते हैं। फिर चाहे उन्हें सुसाइड बंबर बनकर अपने ही शरीर के चीथड़े ही क्यों ना उडाने पड़े। आतंकवादियों को जरा भी इस बात का इल्म नहीं होता कि उन्होंने उनके इस काम से कितने मासूमो को मारा है ।

आतंकवाद जाति और मज़हब के नाम पर गहरा धब्बा हैं। जो लोग भी इस कृत्य में शामिल होते है उनकी जीवन प्रत्याशा अपने आप ही कम जाती हैं। एक ओर जहां आतंकी नेटवर्क को चलाने के लिए बालकों के दिमाग में ज़हर और नफ़रत भरकर उनको कम उम्र में ही इस काम में धकेल दिया जाता है। वही दूसरी और युवाओं को रूपये और उनके परिवार का पोषण का जूठा वादा करके आतंकी बनने के लिए घसीट लिया जाता है।

बदलते परिवेश में मनोवैज्ञानिक तरीके से युवक और युवतियों का धीरे-धीरे ब्रेनवाश करके 15 से 16 वर्ष की आयु तक उन्हें एक ट्रेंड और क्रूर आतंकी बना दिया जाता है। फिर ये मासूम एक ऐसे व्यक्ति बन जाते है जिसका खुद का दिमाग चलना ही बंद हो जाता है। और जो भी उन्हें आदेश या टारगेट दिए जाते हैं वे अपना दिमाग बिना चलाए आंख मूंद कर उन टारगेटों को पूरा करने के लिए निकल जाते हैं। फिर चाहे उन्हें सुसाइड बंबर बनकर अपने ही शरीर के चीथड़े ही क्यों ना उडाने पड़े। आतंकवादियों को जरा भी इस बात का इल्म नहीं होता कि उन्होंने उनके इस काम से कितने मासूमो को मारा है ।

इतनी क्रूरता आखिर किस लिए सिर्फ? सरकार को दिखाने के लिए या जनता को डराने के लिए? या फिर अपने नाकाम मानसून को पूरा करने के लिए? इस पर मैं बस इतना कहूंगी कि ये घटनाएं सिर्फ एक क्रूर मनुष्य के दिमाग़ से जन्म लेती है और विचलित, ब्रेन लॉक मनुष्य के द्वारा अंजाम तक पहुंचाई जाती हैं। जिनका मकसद सिर्फ समाज में आतंकवाद डर को फैलाना होता है।

आतंकवादी ऐसे लक्ष्य विहीन लोग होते है जो,कश्मीर की आड़ में कश्मीर को ही खोखला कर रहे है। कश्मीर में रहने वाला शायद ही कोई ऐसा परिवार होगा जिसने आतंक के इस डरावने चेहरे का सामान न किया हो। पाकिस्तान मैं बैठे कुछ लोग अगर कश्मीर की आजादी की बात कर रहे है तो इसमें कोई भी दो मत नहीं है कि जितना वह आतंक और नरसंहार फैला रहे है उसके बाद उनसे शांति और करुणा की बात करना बेफिजूल ही है ।

ये न केवल अपने खूनी मंसूबों को ही अंजाम दे रहे हैं। बल्कि हथियारों का निर्माण और उनकी तस्करी करने वालों को भी सीधा फ़ायदा पहुंचा रहे हैं। हथियारों की तस्करी करने वाले ये लोग तो अमीर देशो में बैठे हुए हैं। और आतंकवादी बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता हैं मिडिल क्लास और निम्न तबगे के लोगों का। जबकि इन आतंकियों के जो हुक्मरान होते हैं वह खुद अपने बच्चों और परिवार को

तो लग्जरी लाइफ देते हैं और आम जन को बली चढ़ाने के लिए आतंकवाद की आग में झोंक देते हैं।

वर्तमान घटना क्रम की बात करे तो, दिल्ली लाल किले के पास हुए जोरदार कार धमाके में डॉ. उमर नबी ने करीब 30-40 किलोग्राम विस्फोटक का इस्तेमाल किया था। पुलिस इस बात की आशंका जता रही हैं। कि इस धमाके में अमोनियम नाइट्रेट का इस्तेमाल हुआ है।सूत्रों के मुताबिक आतंकी ने विस्फोट को और खतरनाक बनाने के लिए अमोनियम नाइट्रेट के अलावा दूसरे पदार्थों का भी इस्तेमाल भी किया होगा। जिसकी जांच अभी चल रही है। इन्हीं केमिकल पदार्थों के द्वारा ही धमाका काफी जोरदार हुआ था और इसकी गूंज काफी दूर तक सुनाई दी थी।

मार्च 2020 में गिरफ्तार अलीपुर महिला सुधार गृह में बंद परवीन जो मौलाना मसूद अज़हर की बहन, है और लश्कर - ए -तैयबा की एक हैंडलर भी है से पूछ ताछ में पता चला है कि वह खुद जैश की महिला शाखा की प्रमुख सईदा अज़हर के निर्देशों पर काम करती थी। परवीन कथित तौर पर आतंकवादियों के लिए ऑनलाइन भर्ती का काम संभालती थी और उसकी गतिविधियों पर नज़र रखती थी है।

आज आतंकी सिर्फ पहाड़ों में छिपे बंदूकधारी नहीं रह गए है, बल्कि यहां तो यूनिवर्सिटी में पढने वाले डॉक्टर, इंजीनियर और टेक-सेवी नौजवानो को भी आतंकी बनाया जा रहा हैं। भारत के भीतर व्हाइट कॉलर टेरर का ऐसा नेटवर्क तैयार किया गया है, जो मेडिकल पेशे की आड़ में देश को अस्थिर करने की साजिश रच रहा था।

फ़िदायीन आतंकी डॉ. उमर नबी जिसके इस विस्फोट में टुकड़े टुकड़े हो गए थे, उसके शव के कई टुकड़े मोर्चरी में रखे हुए हैं। डीएनए से उसके शव की पहचान भी हो गई है। फिर भी उमर का शव लेने के लिए अभी किसी ने भी दावा नहीं किया है। ये वही डॉ. उमर है जो पहले विस्फोटक से लदी कार लेकर दिल्ली के वीआईपी इलाकों में घूमता रहा और बाद में इसने इस भयानक विस्फोट को अंजाम दिया। उमर की उम्र 43 वर्ष ही थी और वह अल फलाह यूनिवर्सिटी फरीदाबाद से जुड़ा हुआ था। हालांकि सुरक्षा एजेंसियां उसके परिवार से लगातार पूछताछ कर रही हैं। पर विचार करने वाली बात यही है की, ऐसे नौजवान जो आतंक के हत्थे चढ़ जाते है अपने पीछे अपने पूरे परिवार को जीवन भर के लिए बदनामी और सामाजिक बहिष्कार का हिस्सा बना जाते है।

लाल ग्रह दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

सदैव आकर्षण का केन्द्र रहा है खूबसूरत लाल ग्रह

यह दिवस 28 नवम्बर 1964 को नासा (नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन) द्वारा अंतरिक्ष यान 'मेरिनर-4' के प्रक्षेपण की याद में मनाया जाता है, जो कई असफल मिशनों के बाद मंगल ग्रह पर उतरने वाला पहला अंतरिक्ष यान था। करीब आठ महीने की यात्रा करने के बाद यह अंतरिक्ष यान 14 जुलाई 1965 को लाल ग्रह पर पहुंचा था। 28 नवम्बर 1964 को नासा ने जब पहली बार 'मेरिनर-4 रोबोटिक इंटरप्लेनेटरी प्रो' लांच किया था, तब अनौपचारिक छुट्टी की घोषणा की गई थी और सभी ने नासा की इस सफलता को उत्साहपूर्वक मनाया था। मेरिनर-4 को फ्लाई-बाय के दौरान डेटा एकत्र करने, ग्रहों की खोज और मंगल ग्रह के वैज्ञानिक अवलोकन को सक्षम करने तथा उस डेटा को पृथ्वी पर लोगों को वापस रिले करने के लिए बनाया गया था। अपने 228 दिनों के सफर को सफलतापूर्वक तय करने के बाद मेरिनर-4 पहला ऐसा स्पेसक्राफ्ट बना था, जिसे नासा द्वारा मंगल ग्रह पर सफलतापूर्वक उतारा गया था। उसी स्पेसक्राफ्ट ने मंगल ग्रह की तस्वीरें पहली बार दुनिया के सामने प्रस्तुत की थी।

वैसे तो रात होते ही आसमान में बहुत सारे तारे टिमटिमाते नजर आते हैं लेकिन इंसानों के लिए पृथ्वी के बगल में सदा से ही आकर्षण का केन्द्र रहा एक खूबसूरत लाल ग्रह मौजूद है, जिसे 'रेड प्लेनेट' अथवा 'मंगल' के नाम से जाना जाता है। मंगल ऐसा ग्रह है, जो रात के समय लाल रंग का दिखाई देता है। इसी लाल ग्रह के बारे में और अधिक जानने के लिए प्रतिवर्ष 28 नवम्बर को 'लाल ग्रह दिवस' (रेड प्लेनेट डे) मनाया जाता है। यह दिवस 28 नवम्बर 1964 को नासा (नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन) द्वारा अंतरिक्ष यान 'मेरिनर-4' के प्रक्षेपण की याद में मनाया जाता है, जो कई असफल मिशनों के बाद मंगल ग्रह पर उतरने वाला पहला अंतरिक्ष यान था। करीब आठ महीने की यात्रा करने के बाद यह अंतरिक्ष यान 14 जुलाई 1965 को लाल ग्रह पर पहुंचा था। 28 नवम्बर 1964 को नासा ने जब पहली बार 'मेरिनर-4 रोबोटिक इंटरप्लेनेटरी प्रो' लांच किया था, तब अनौपचारिक छुट्टी की घोषणा की गई थी और सभी ने नासा की इस सफलता को उत्साहपूर्वक मनाया था। मेरिनर-4 को फ्लाई-बाय के दौरान डेटा एकत्र करने, ग्रहों की खोज और मंगल ग्रह के वैज्ञानिक अवलोकन को सक्षम करने तथा उस डेटा को पृथ्वी पर लोगों को वापस रिले करने के लिए बनाया गया था। अपने 228 दिनों के सफर को सफलतापूर्वक तय करने के बाद मेरिनर-4 पहला ऐसा स्पेसक्राफ्ट बना था, जिसे नासा द्वारा मंगल ग्रह पर सफलतापूर्वक उतारा गया था। उसी स्पेसक्राफ्ट ने मंगल ग्रह की तस्वीरें पहली बार दुनिया के सामने प्रस्तुत की थी।

अब तक 14 मंगल मिशन सफलतापूर्वक आयोजित किए जा चुके हैं, जहां मानव निर्मित वस्तुएं इस ग्रह पर उतरी। भारत भी इसरो के जरिये मंगल ऑर्बिट तक पहुंचने के अपने 'मंगल मिशन' में सफल हो चुका है। मंगल को जानने के लिए अब तक दुनियाभर में शुरू किए गए दो तिहाई अभियान असफल रहे हैं लेकिन भारत 24 सितम्बर 2014 को मंगल पर पहुंचने के साथ ही विश्व में अपने पहले ही प्रयास में सफल होने वाला पहला देश तथा सोवियत रूस, नासा और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के बाद मंगल पर पहुंचने वाला दुनिया का चौथा देश बना था। सूर्य से चौथा ग्रह 'लाल ग्रह' यानी मंगल है और मंगल तथा पृथ्वी का गहरा संबध माना जाता रहा है। मंगल ग्रह पृथ्वी के आकार का लगभग आधा है और अपने साथी स्थलीय ग्रहों की ही तरह इसमें भी एक केन्द्रीय कोर, एक चट्टानी आवरण और एक ठोस परत है। धूल भरी, ठंडी, रेगिस्तानी दुनिया में इसका वातावरण बहुत पतला है। मौसमों, ध्रुवीय बर्फ की चोटियों, घाटियों, विलुप्त ज्वालामुखी और इस बात के प्रमाण होने के साथ-साथ कि यह एक समय और भी अधिक सक्रिय था, मंगल एक गतिशील ग्रह है। पृथ्वी की तुलना में सूर्य से अधिक दूरी के कारण, मंगल ग्रह पर ऐसे मौसम का अनुभव होता है, जो अत्यधिक तापमान से बना होता है और तापमान -191 डिग्री फारेनहाइट से 81 डिग्री तक जा सकता है। लाल ग्रह के बारे में जानने के लिए कई एस्ट्रोनॉमी क्लब की भी शुरुआत की गई है,

जो मंगल ग्रह से जुड़ी जानकारियों को एक-दूसरे से बांटने का काम करते हैं।

मंगल ग्रह के चारों ओर कोई वलय नहीं हैं। कई अध्ययनों से पता चल चुका है कि मंगल ग्रह पृथ्वी की स्थलाकृति से काफी मिलता-जुलता है। मंगल ग्रह पर पृथ्वी की तरह अलग-अलग मौसम हैं लेकिन वे पृथ्वी पर मौसम की तुलना में अधिक समय तक रहते हैं। चूंकि मंगल ग्रह के बहुत से गुण पृथ्वी की तरह ही हैं, इसीलिए पृथ्वी के पर्यावरण की तरह मंगल के पर्यावरण को समझकर यह माना जाता है कि बहुत साल पहले मंगल ग्रह पर भी जीवन संभव हुआ होगा और यह भी माना जाता है कि भविष्य में भी मंगल ग्रह पर जीवन संभव है। सूर्य से बहुत दूर होने के कारण मंगल की कक्षा पूरी होने की गति बहुत धीमी है और इसी कारण मंगल ग्रह पर एक वर्ष में करीब 687 दिन बीतेंगे, जो पृथ्वी पर एक वर्ष से लगभग दोगुना समय है। सूर्य के चारों ओर एक चक्कर पूरा करने में मंगल ग्रह को 1.88 पृथ्वी वर्ष लगते हैं। मंगल ग्रह का गुरुत्वाकर्षण खिंचाव पृथ्वी का करीब एक-तिहाई है और गुरुत्वाकर्षण के विभिन्न खिंचाव के परिणामस्वरूप ही यदि किसी व्यक्ति का वजन पृथ्वी पर 100 पाउंड है तो अंतरिक्ष में उसका वजन केवल 38 पाउंड ही होगा। यह जानना भी बहुत दिलचस्प है कि मंगल ग्रह को लाल ग्रह क्यों कहा जाता है? दरअसल यह आकाश में एक लाल सितारे के रूप में दिखाई देता है और इसकी सतह भी महीन रेत और आयरन ऑक्साइड से भरी धूल से ढ़की हुई होती है। मंगल ग्रह की सतह पर पाए जाने वाले तत्वों के कारण ही यह ग्रह लाल रंग का है। नासा के मुताबिक मंगल की सतह पर आयरन ऑक्साइड की बहुत अधिक मात्रा में मौजूदगी है और वैज्ञानिकों के अनुसार जिस प्रकार ऑक्सीजन तथा नमी के सम्पर्क में आने पर पृथ्वी पर लोहे की वस्तुओं पर जंग लग जाती है, ठीक उसी प्रकार मंगल की मिट्टी में मौजूद लौह खनिज में जंग लग गया है और उसी कारण यह लाल नजर आती है। मंगल की सतह पर काफी मात्रा में लोहा है और जब यह ऑक्सीजन के अणुओं के साथ क्रिया करता है तो आयरन ऑक्साइड बनाता है, जिसे आम भाषा में जंग लगना भी कहते हैं। पृथ्वी अपने वायुमंडल के कारण नीले रंग की दिखाई देती है लेकिन मंगल का जंग जैसा लाल रंग इसकी मिट्टी में ऑक्सीकृत लोहे के कारण आता है। नासा के मुताबिक मंगल ग्रह पर बहुत सारी चट्टानें लोहे से भरी हुई हैं और जब वे बाहरी वातावरण के सम्पर्क में आती हैं तो ऑक्सीकरण करती हैं और लाल हो जाती हैं। जब उन चट्टानों से जंग लगी धूल वायुमंडल में फैलती है तो इससे मंगल ग्रह का आकाश लाल या गुलाबी दिखने लगता है। आयरन ऑक्साइड अथवा आयरन रस्ट की मात्रा बहुत ज्यादा होने के कारण ही मंगल ग्रह लाल रंग का दिखाई देता है और इसीलिए इसे लाल ग्रह कहा जाता है।

विश्वरंग की छाया-छबियां

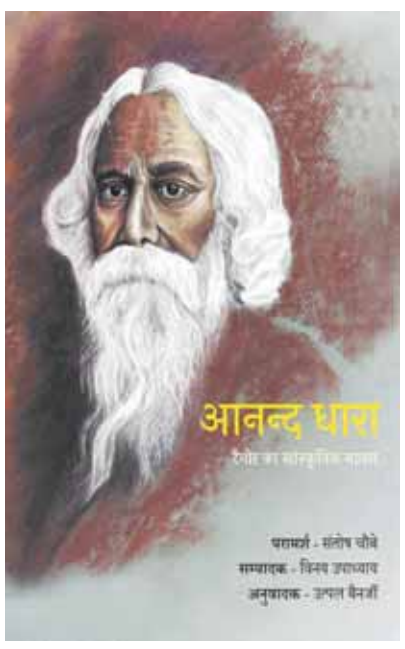

राइट क्लिक

एसआईआर अब राजनीति से ज्यादा मानवीय समस्या बन गई है..

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

चुनाव आयोग द्वारा देश के 12 राज्यों और तीन केन्द्र शासित प्रदेशों में करीब एक माह से कराए जा रहे मतदाताओं के एसआईआर (स्पेशल इंटेसिव रिवीजन) का मुद्दा अब राजनीतिक से ज्यादा मानवीय होता जा रहा है। एसआईआर के सियासी विरोध को अलग रखे तो भी इस समूची प्रक्रिया में पूरे देश में अब तक 25 बीएलओ (बूथ लेवल ऑफिसर) की (तृणमूल कांग्रेस के मुताबिक 34) मौतें सचमुच चिंता पैदा करने वाली हैं और यह एसआईआर की प्रक्रियागत खामी की ओर इशारा करती है। दुख की बात तो यह है कि एसआईआर में लगे कुल जितने बीएलओ की मौतें हुई हैं, उनमें सबसे ज्यादा 9 उस मध्यप्रदेश के हैं, जहां सत्तारूढ़ दल भाजपा पूरी तरह एसआईआर के पक्ष में है। इस बीच एसआईआर को लेकर सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका पर सुनवाई के दौरान सर्वोच्च अदालत ने एसआईआर जारी रखने को हरी झंडी दे दी है, लेकिन चुनाव आयोग को इस बात पर संवेदनशीलता के साथ विचार करना चाहिए कि इस प्रक्रिया में शामिल बीएलओ एक के बाद एक जानें क्यों गंवा रहे हैं? इनमें भी उन बीएलओ के बारे में समझा जा सकता है कि जो पहले से बीमार हैं, लेकिन जो काम के दबाव को सहन न करने के कारण खुदकुशी कर रहे हैं, वह तो बहुत ही दर्दनाक और अमानवीय है। आखिर एक वैधानिक प्रक्रिया को समय पर पूरा न कर पाने के अवसाद के कारण कोई कैसे फांसी लगाकर अपने परिवार को अनाथ होने दे सकता है? क्योंकि काम समय पर पूरा न करने पाने की अधिकतम सजा सस्पेंशन ही है। जाहिर है कि यह कदम उसने गहरे डिप्रेशन और हताशा में ही उठाया होगा। इस बीच चुनाव आयोग ने बीएलओ का मानदेय बढ़ाकर दो गुना कर दिया है, लेकिन इसका भी कोई सकारात्मक असर होता नहीं दिख रहा है। जानकारों का मानना है कि बीएलओ पर काम समय पर निपटाने का अत्यधिक दबाव है और समयावधि कम है। और आयोग समयावधि बढ़ाने के लिए तैयार नहीं है। इसके पीछे कौन-सी जिद है, यह समझना मुश्किल है। जबकि इसके पूर्व 2003 में जो देशव्यापी एसआईआर हुआ था, वह प्रक्रिया 6 माह में पूरी हुई थी। तब न तो कहीं विरोध हुआ था और और न ही कोई खुदकुशी सामने आई थी।

जहां तक एसआईआर को रोकने की बात है तो सुप्रीम कोर्ट ने साफ कर दिया है कि चुनाव आयोग को इसका वैधानिक अधिकार है। आयोग को यह अधिकार संविधान के अनुच्छेद 324 की धारा 21 के तहत मिला हुआ है। 1952 से अब तक देश में 13 बार एसआईआर हुआ है, लेकिन कभी इस पर इतना बवाल नहीं मचा, जितना इस बार दिखाई पड़ रहा है। रहा सवाल कुछ विपक्षी दलों द्वारा एसआईआर के विरोध का तो उसके पीछे यह भय है कि इस प्रक्रिया की आड़ में उसके वोट बैंक को खत्म किया जा सकता है। बिहार में विपक्षी महागठबंधन की करारी हार से यह आशंका और बलवती हुई है, जहां 65 लाख वोट चुनाव आयोग ने काट दिए थे। हालांकि इस तरह से वोटों का काटा जाना संदेह ज्यादा है, पुष्टिकारक कम। बिहार में महागठबंधन की हार के और भी कई कारण हैं। इसमें दो राय नहीं कि देश में समय-समय पर मतदाता सूचियों का पुनरीक्षण होना चाहिए तथा अवैध, मृत अथवा फर्जी मतदाताओं के नाम हटने चाहिए। क्योंकि मतदान का अधिकार महज एक बटन दबाने का अधिकार नहीं है बल्कि यह देश के हर नागरिक को मिला वह राजनीतिक अधिकार है, जिससे वह अपने शासकों को चुन या खारिज कर सकता है। राजनीतिक दल अपने सत्ता स्वार्थों के चलते कई ऐसे नामों को जुड़वाने में नहीं हिचकिचाते जो अवैध रूप से भारत में रह रहे हैं। ऐसे भी नाम मतदाता सूची में बड़े पैमाने पर हैं, जो कहीं और जाकर बस गए या भगवान को प्यारे हो चुके हैं। इस लिहाज से वोटर लिस्ट की सफाई चुनाव आयोग का लोकतांत्रिक कर्तव्य है। यही कारण है कि मतदाताओं के स्तर पर एसआईआर का कहीं कोई विरोध नहीं है। लेकिन इस बार एसआईआर का जो अमानवीय पक्ष उभर कर आया है, वह बहुत चिंताजनक और समूची प्रक्रिया पर पुनर्विचार की मांग करता है। हालांकि चुनाव आयोग का एक तर्क यह हो सकता है कि पूरे देश में 5 लाख 30 हजार बीएलओ एसआईआर में लगे हैं। इनमें से दो दहाई में कुछ लोगों की मौतें हुई है तो यह दुखद भले हो, अलार्मिंग नहीं है। लेकिन इस अमानवीय तर्क से शायद ही कोई सहमत हो। यदि काम के दबाव में एक भी सरकारी कर्मचारी की मौत हुई है तो वह चिंताजनक और गंभीर बात है। दूसरे, यह मौतें लगभग उन सभी राज्यों में हो रही हैं, जहां एसआईआर हो रहा है। अब सवाल यह है कि क्या चुनाव आयोग एसआईआर पूरा करने के लिए ज्यादा समय नहीं दे सकता था? तो इसका कारण शायद यह है कि अगले साल 2026 में तीन राज्यों असम, पश्चिम बंगाल और पुदुच्चेरी के विधानसभा चुनाव मार्च/अप्रैल में होने हैं। उसके बाद मई में केरल विस के चुनाव हैं। ऐसे में आयोग को एसआईआर प्रक्रिया हर हाल में फरवरी में पूरी कर लेनी होगी। इसका एक उपाय यह हो सकता था कि बिहार के साथ इन राज्यों में भी एसआईआर शुरू कर दिया जाता तो ज्यादा वक्त मिल जाता। बीएलओ पर काम का इतना दबाव न होता। लेकिन आयोग ने इन राज्यों को एसआईआर 2.0 में डाला। वैसे हमे यह भी ध्यान रखना चाहिए कि आमतौर पर असैनिक काम में लगे सरकारी कर्मचारियों को तेजी से काम करने की आदत नहीं होती। आम तौर पर काम को लटकाने में माहिर मानसिकता युद्ध स्तर पर काम कभी-कभार ही कर पाती है। वह भी अपने नियमित कामों के साथ। ऐसे में बहुत से सरकारी कर्मचारी एसआईआर को हिमालय पर्वत मानकर जान देने में ही मुक्ति मान रहे हैं। 2003 के एसआईआर की तुलना में इस बार कम अवधि के पीछे एक कारण यह भी हो सकता है कि पहले सारा काम मेन्युअल होता था। अब प्रौद्योगिकी के चलते जब सब ऑन लाइन, तुरत-फुरत हो रहा है तो एसआईआर बाबा आदम की चाल से क्यों चले?

ये सारे तर्क अपनी जगह सही हैं, लेकिन बीएलओ की मौतों को केवल आंकड़ों में तौलना सही नहीं है। बेहतर होता कि गंभीर बीमारी से पीड़ित कर्मचारियों को इस जिम्मेदारी से अलग रखा गया होता। दूसरे, जो कर्मचारी काम के दबाव में हताश होकर मौत को गले लगा रहे हैं, उनकी एसआईआर ट्रेनिंग के साथ-साथ काउंसलिंग भी की जानी चाहिए। एक समस्या उन वरिष्ठ कर्मचारियों के साथ भी है, जिनकी डिजीटल साक्षरता लगभग शून्य है। उनके लिए ऑनलाइन काम करना पहाड़ लांघने जैसा है। तकनीकी ज्ञान के अभाव और सीखने की अनिच्छा भी उन्हें आत्मघात की ओर धकेलती है। वैसे यह भी कड़वी सचाई है कि सोशल मीडिया के इस जमाने में छोटी-छोटी बातों पर भी खुदकुशी करने की प्रवृत्ति समाज में तेजी से बढ़ी है। इस दायरे में पांच-छह साल के बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़े तक शामिल है। अब तो यह एक बड़ा सामाजिक-मानसिक रोग बनता जा रहा है, जहां व्यक्ति मामूली दबाव में भी इतना हताश हो जाता है कि जान गंवाने पर उतारू हो जाता है। बीएलओ भी उससे अलग नहीं हैं। यहां एसआईआर एक निमित्त बन गया है। बावजूद इसके चुनाव आयोग को इसे मानवीय समस्या मानकर उसके निदान की गंभीरता से कोशिश करनी चाहिए।

कांग्रेस नेता से मारपीट का मामला

इंदौर। विधानसभा क्षेत्र-1 में कांग्रेस नेता की दबंगई का मामला सामने आया है। चंदन नगर पुलिस ने स्थानीय निवासी नीरज शर्मा की शिकायत पर क्षेत्रीय कांग्रेस अध्यक्ष भूपेंद्र केतके उर्फ नेता के खिलाफ मारपीट और जान से मारने की धमकी का केस दर्ज किया है। नीरज ने बताया कि मंगलवार शाम वह अपने घर पर था, तभी भूपेंद्र हमेशा की तरह उसके घर के सामने बैठ गया और अपशब्द बोलने लगा। विरोध करने पर भूपेंद्र और उग्र हो गया तथा तेज आवाज में चिल्लाने लगा। मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई, लेकिन समझाने पर भी वह नीरज को मारने के लिए दौड़ पड़ा। पीड़ित का कहना है कि भूपेंद्र पहले भी कई बार ऐसी हरकतें कर चुका है। एक बार मारपीट भी हुई थी, लेकिन इलाके में उसके राजनीतिक प्रभाव और दबदबे के कारण उसने तब शिकायत नहीं की। पुलिस ने नीरज की रिपोर्ट पर भूपेंद्र के खिलाफ जान से मारने की धमकी सहित कई गंभीर धाराओं में मामला दर्ज कर लिया है और जांच शुरू कर दी है।

जनपद सदस्य से मारपीट की घटना

इंदौर। चंदन नगर में एसआईआर का काम करते समय बांक सरपंच सोहराब पटेल और उसके समर्थकों का जनपद सदस्य से विवाद हो गया। विवाद के चलते सरपंच के साथियों ने कांग्रेस समर्थित जनपद सदस्य मोहम्मद आबिद पिता मोहम्मद असलम निवासी ग्रीन पार्क कालोनी के साथ मारपीट की। पीड़ित ने बताया कि क्षेत्र में कई बीएलओ घुम रहे थे। उन्हें नागरिकों के मकान ढूंढने में दिक्कत आ रही थी। परेशान होने पर मैं उनके साथ लोगों के घर बताने गया। जब यह जानकारी सरपंच को लगी तो वे विवाद करने लगे। सरपंच और मेरे बीच राजनीतिक प्रतिद्वंदता चल रही है। नाराज होकर सरपंच के साथियों जोएब पिता मंसूर पटेस निवासी बाक, फारूक पिता अब्दुल अली पटेल निवासी राजकुमार नगर, बाक, शाहरुख पिता सोहराब पटेल निवासी ग्राम बांक तथा अल्ताफ उर्फ गोलू पिता अशरफ पटेल निवासी ग्राम बाक ने संगमत होकर मारपीट की। पीड़ित का कहना है कि आरोपियों ने बेवजह उसे परेशान किया और उसकी सुरक्षा के लिए खतरा बना हुआ है। मामले की शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। स्थानीय लोगों का कहना है कि क्षेत्र में आए दिन आपराधिक तत्व सक्रिय रहते हैं, जिससे आमजन में डर फैला हुआ है। पीड़ित ने आरोपियों के खिलाफ जल्द सख्त कार्रवाई की मांग की है।

राज्यपाल से संभागायुक्त और कलेक्टर मिले

इंदौर। राज्यपाल मंगूभाई पटेल बुधवार से दो दिवसीय प्रवास पर हैं। पहले दिन वे इंदौर और महू में आयोजित कार्यक्रमों में शामिल हुए। शाम को रेसीडेंसी कोठी में राज्यपाल मंगूभाई पटेल से संभागायुक्त डॉ. सुदाम खाड़े और कलेक्टर शिवम वर्मा ने भेंट की। संभागायुक्त ने राज्यपाल को अवसंरचना परियोजनाओं, स्वास्थ्य सेवाओं की जानकारी दी। वहीं कलेक्टर ने प्रशासनिक कार्यों, कानून-व्यवस्था आदि की जानकारी दी। राज्यपाल ने प्रशासन की कार्यकुशलता की सराहना करते हुए कहा कि लोककल्याणकारी कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करने संवेदनशील, पारदर्शी और उत्तरदायी प्रशासन अनिवार्य है।

घर में घुसे चोर जेवरात ले उड़े

इंदौर। अंधेरे का फायदा उठाकर घर में घुसकर अज्ञात चोरों ने जेवरात उड़ा दिए। लसूड़िया पुलिस को शिवानी ट्रांसपोर्ट के पास रहने वाले भगवती पंवार ने बताया कि 20 नवंबर की शाम से 21 नवंबर की सुबह के बीच उनके घर में चोरी हुई। परिवार को सुबह जब कमरे अस्त-व्यस्त मिले, तब घटना का पता चला। इसके बाद उन्होंने पुलिस को सूचना दी।

दो भाइयों पर हमला, मां भी घायल

इंदौर। विवाद को लेकर लसूड़िया थाना क्षेत्र में दो भाइयों पर हमला किया गया। आरोपियों ने उनके घर पर भी पथराव भी किया। बीचबचाव करने आईं फरियादी की मां को भी सिर में चोट आई है। घटना सिंगापुर टाउनशिप क्षेत्र की स्वामी विवेकानंद कॉलोनी की है। फरियादी अजय पिता बंशीलाल पवार ने बताया कि जब वे काम से वापस घर लौटे तो आरोपी संजू और राजा उनके घर के सामने खड़े थे। आरोपियों ने उन्हें देखते ही गाली-गलौज शुरू कर दी और शिकायत करने का उलाहना देते हुए मारपीट शुरू कर दी। अजय को पिटता देख जब उनके भाई विजय बीचबचाव करने आए तो आरोपियों ने उसे भी पीटा।

सास ने बहू पर हमला किया

इंदौर। सांवेर में बेटा पैदा न होने की बात को लेकर सास ने बहू से मारपीट की। घटना ग्राम मुनोद की है। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी सास कमला राठौर के खिलाफ केस दर्ज किया है। पीड़िता ने बताया कि वह मजदूरी करती है। घर में मेरी सास भी साथ ही रहती है। मेरी तीन बेटियां है। सास मुझे आए दिन मेरी बेटियों को लेकर ताने मारती रहती है। वह बोलती है हमें तो लडका चाहिए। मैंने कहा कि लड़का-लड़की का पैदा होना तो ईश्वर के हाथ में हैं। इस पर आरोपी सास ने मारपीट की।

कोचिंग हब के छात्रों में बढ़ता अवसाद और आत्महत्या, इंदौर भी इस साये की गिरफ्त में

इंदौर। देशभर में छात्र आत्महत्या की तस्वीर राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के हालिया आंकड़ों के अनुसार देश में हर साल 12-13 हजार से अधिक छात्र आत्महत्या कर रहे हैं, यानी हर दिन लगभग 35 से अधिक छात्र अपनी जान दे रहे हैं। इन मौतों में बड़ी हिस्सेदारी 18 वर्ष से कम उम्र के विद्यार्थियों की है और परीक्षा में असफलता व शैक्षणिक दबाव प्रमुख कारणों के रूप में सामने आ रहे हैं। इस रिपोर्ट में मध्यप्रदेश का भी उल्लेख है। इंदौर को देश के सबसे स्वच्छ शहरों में गिना जाता है, लेकिन मानसिक स्वच्छता और तनाव प्रबंधन के मामले में चित्र चिंताजनक है। शहर प्रदेश का बड़ा कोचिंग हब बन चुका है, जहां पांच हजार से अधिक कोचिंग संस्थान चल रहे हैं। इनमें से दो सौ से अधिक संस्थान नीट, जेईई और आईआईटी की तैयारी कराते हैं। भंवरकुआं, गीता भवन, पलासिया, विजय नगर जैसे क्षेत्रों में बड़ी संख्या में छात्र रहते और पढ़ते हैं। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सूचनाओं के अनुसार इंदौर के कोचिंग संस्थानों में पढ़ने वाले लगभग 20 या उससे अधिक विद्यार्थी हर वर्ष तनाव के कारण आत्महत्या कर रहे हैं, जिसमें सर्वाधिक दबाव नीट और जेईई के अभ्यर्थियों पर दर्ज किया जा रहा है।

असफलता की वजह से इंदौर और भोपाल में छात्र आत्महत्या की घटनाएं ज्यादा

स्टेट टास्क फोर्स का गठन

मानसिक स्वास्थ्य के लिए एसटीएफ और नए उपाय छात्रों को आत्मघात से बचाने के लिए राज्य सरकार ने उच्च शिक्षा विभाग के माध्यम से स्टेट टास्क फोर्स (एसटीएफ) का गठन किया है, जिसे विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और कोचिंग संस्थानों में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी प्रयासों की निगरानी की जिम्मेदारी दी गई है। इस टास्क फोर्स में स्कूल शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा, स्वास्थ्य, पुलिस, बाल सुरक्षा, सामाजिक न्याय और नगरीय प्रशासन विभागों के प्रतिनिधियों को शामिल कर बहु-विभागीय समन्वय पर जोर दिया गया है। शैक्षणिक संस्थानों में नोडल अधिकारी नियुक्त किए गए हैं और कॉलेजों में काउंसलिंग कार्यक्रम शुरू किए जा रहे हैं, ताकि तनावग्रस्त छात्र समय रहते विशेषज्ञों से मदद ले सकें। उद्देश्य यह है कि किसी भी छात्र की भावनात्मक परेशानी को परीक्षा परिणाम की तरह 'गोपनीय' न रहने दिया जाए, बल्कि उसे संस्थागत स्तर पर पहचाना और संभाला जाए।

आसपास के जिलों और छोटे कस्बों से आए ये छात्र पढ़ाई, आर्थिक दबाव, अकेलेपन और परिवार से दूर रहने के कारण एक जटिल मानसिक संकट से गुजरते हैं। मध्य प्रदेश और सरकार की बढ़ती चिंता एनसीआरबी की रिपोर्ट बताती है कि 2023 में देशभर में 15 हजार से अधिक बच्चों ने आत्महत्या की, जिनमें 1668 मामलों के साथ मध्य प्रदेश की स्थिति महाराष्ट्र के बाद दूसरे स्थान पर है। प्रदेश के भीतर भी इंदौर जिले में सबसे अधिक और भोपाल में दूसरे नंबर पर छात्र आत्महत्या के मामले दर्ज किए गए। इससे राज्य सरकार की चिंता स्वाभाविक रूप से बढ़ी है।

नीट व जेईई जैसे कठिन प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं को लेकर समाज, परिवार और संस्थानों की ऊंची अपेक्षाएं, साथ ही असफलता का डर, इन छात्रों को असहायता, हीन भावना और अवसाद की ओर धकेल रहे हैं। कई मामलों में बच्चे अपनी दिक्कतें अभिभावकों व शिक्षकों से साझा नहीं कर पाते, जिसके परिणामस्वरूप वे आत्मघाती कदम उठाने या नशे जैसी राह पकड़ने की स्थिति में पहुंच जाते हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे नीट और जेईई की तैयारी कर रहे छात्रों पर दबाव इतना अधिक है कि इन्हें भारत में मानसिक स्वास्थ्य संकट का केंद्र माना जाने लगा है। एक हालिया शोध में यह पाया गया कि आत्महत्या करने वाले ज्यादातर प्रतियोगी 15-20 वर्ष आयु वर्ग के हैं, और उनमें से बड़ी संख्या मेडिकल और इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी कर रही थी।

'टॉप' की प्रतिस्पर्धा घातक

विशेषज्ञों की चेतावनी और आगे की राह मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों और शोधकर्ताओं ने चेतावनी दी है कि अगर शैक्षणिक दबाव, अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा और 'हर हाल में टॉप करना है' जैसी सोच पर काबू नहीं पाया गया, तो छात्र आत्महत्या की यह लहर समाज और शिक्षा व्यवस्था के लिए और खतरनाक रूप ले सकती है। वे सुझाव देते हैं कि कोचिंग संस्थानों में नियमित मनोवैज्ञानिक परामर्श, परीक्षा पैटर्न में मानवीय दृष्टिकोण, हॉस्टल में सहायक माहौल, और अभिभावकों को संवेदनशील बनाने जैसे कदम अनिवार्य रूप से लागू किए जाएं। इंदौर की स्वच्छता की सफलता को अब 'मन की स्वच्छता' और तनाव-मुक्त शिक्षा के मॉडल में बदलना अगला बड़ा लक्ष्य होना चाहिए, ताकि शहर सिर्फ कचरे से नहीं, बल्कि बच्चों के टूटते मन से भी साफ हो सके।

बन रहे खरगोन बायपास का मंत्री ने निरीक्षण किया, कई खामियां मिली

अधीक्षण यंत्री निलंबित, उपयंत्री व कंसल्टेंट पर भी कार्रवाई

इंदौर/खरगोन। लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह ने बुधवार देर शाम खरगोन जिले में निर्माणाधीन बायपास (राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 347) का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान सड़क निर्माण में कई गंभीर खामियां सामने आईं। मंत्री के साथ मुख्य अभियंता बीपी बोरासी, इंदौर परिक्षेत्र के मुख्य अभियंता सीएस खरत, मुख्य अभियंता (भवन) सुरेंद्र राव गौरखेड़े तथा अधीक्षण यंत्री मयंक शुक्ला मौजूद रहे।

माप परीक्षण में बायपास के चार स्थानों पर डीबीएम की मोटाई तो मानक के अनुसार पाई गई, लेकिन उसका कॉम्पेक्शन असंतोषजनक मिला। वहीं शोल्डर निर्माण में उपयोग किया गया पत्थर 50 मिमी से कम के मानक के विरुद्ध बड़े आकार का पाया गया, जिससे निर्माण गुणवत्ता पर सवाल खड़े हुए। निरीक्षण के दौरान निर्माण सामग्री के सैंपल भी लिए गए। इस प्रक्रिया में यह चौंकाने वाली बात सामने आई कि सैंपलिंग के लिए निर्धारित मानदंडों के अनुरूप बैग तक उपलब्ध नहीं थे। मंत्री सिंह ने इसे गंभीर लापरवाही मानते हुए तत्काल एक्शन लेने के निर्देश दिए।

इस मामले में खरगोन प्रयोगशाला के प्रभारी अधीक्षण यंत्री विजय सिंह पवार को तत्काल निलंबित कर दिया गया है। वहीं संबंधित उपयंत्री के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश मुख्य अभियंता राष्ट्रीय राजमार्ग को दिए गए हैं। सुपरविजन में अनियमितताएं पाए जाने पर सुपरविजन कंसल्टेंट आईसी ओएन के विरुद्ध भी कार्रवाई के आदेश जारी हुए। मंत्री राकेश सिंह ने स्पष्ट कहा कि किसी भी सड़क परियोजना में गुणवत्ता से समझौता किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं है।

सराफा में हंगामा, चौपाटी संचालकों को साढ़े 9 से पहले आने से रोका तो धरना

निगम की सख्ती और संचालकों का विरोध, समझाइश से काम शुरू

इंदौर। सराफा बाजार में बुधवार रात उस समय तनावपूर्ण स्थिति बन गई, जब निगम कर्मियों ने तय समय से पहले चौपाटी में प्रवेश कर रहे संचालकों को रोक दिया। व्यवस्था के अनुसार सराफा चौपाटी रात 9.30 बजे के बाद ही शुरू होती है, लेकिन कई संचालक 8 बजे से ही ठेले और सामग्री लेकर अंदर पहुंचने लगे।

निगम की ओर से दो दिन पहले मुनादी कराकर स्पष्ट कर दिया गया था कि इससे पहले किसी दुकान को लगने नहीं दिया जाएगा। निगम टीमों ने सराफा के सभी प्रवेश मार्गों पर नाकाबंदी कर दी। जब संचालकों को रोका गया तो कहासुनी बढ़ गई और कई लोग वहीं धरने पर बैठ गए। स्थिति बिगड़ते देख पुलिस को हस्तक्षेप करना पड़ा। समझाइश के बाद रात करीब 10.30 बजे चौपाटी का संचालन शुरू हो सका। सराफा चौपाटी में शुरुआत में केवल 80 पारंपरिक दुकानों को अनुमति दी गई थी, जो अब बढ़कर करीब 300 हो चुकी हैं। बढ़ती भीड़, सुरक्षा जोखिम और ज्वैलर्स के कारोबार पर असर को लेकर पिछले दो साल से विवाद जारी है। ज्वैलर्स का कहना है कि जल्दी लगने वाली चौपाटी से ग्राहकों की आवाजाही बाधित होती है और गैस सिलेंडरों से खतरा बढ़ता है। वहीं, संचालक इसे रोजगार और सराफा की पारंपरिक खाद्य संस्कृति से जोड़कर देखते हैं।

2024 से यह विवाद लगातार तीखा होता गया। हरदा पटाखा फैक्ट्री हादसे के बाद सराफा चौपाटी की सुरक्षा पर सवाल उठे। फरवरी 2024 में जांच समिति बनी, कई बाजारों ने चौपाटी हटाने का समर्थन किया। एमआईसी की समिति ने निरीक्षण में इसे 'बारूद के ढेर' जैसी स्थिति बताया। अगस्त 2025 में ज्वैलर्स एसोसिएशन ने शपथपत्र भी भरवाए और दुकानों के रात 10 बजे तक खुलने पर सहमति बनी। इसके बाद भी दोनों पक्ष कई बार महापौर और निगम आयुक्त से चर्चा कर चुके हैं।

पहले हो चुका फैसला - सराफा चौपाटी में बढ़ती अव्यवस्था और भीड़ प्रबंधन को देखते हुए नगर निगम व महापौर की बैठक में महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया था। अब चौपाटी में मात्र 80 पारंपरिक दुकानें ही लगेंगी, जिन्हें रात 10 बजे से लेकर सुबह 2 बजे तक संचालित करने की अनुमति होगी। निगम ने स्पष्ट किया है कि चाइनीज,मोमोज और गैर-पारंपरिक स्टॉल यहां नहीं लग सकेंगे। इसके लिए निगम द्वारा लाउडस्पीकर से अनाउंसमेंट कर दुकानदारों को सूचित किया गया है कि वे निर्धारित समय का पालन करें। सराफा चौपाटी पर बुधवार रात फिर माहौल गरमा गया,जब निगम टीम ने व्यापारियों को सख्त हिदायत दी कि दुकानें रात 9:30 बजे से पहले नहीं लगाई जाएंगी। अधिकारियों ने बताया कि तय समय से पहले स्टॉल लगाने पर कार्रवाई की जाएगी। उल्लंघन करने वालों की गाड़ियां,काउंटर और सामग्री मौके पर ही जब्त करने के निर्देश जारी किए गए।

पार्टी के बहाने से बुलाकर युवक को पीटा, बदमाश ने मांगे 1 लाख मांगे

इंदौर। पुलिस की तमाम सख्ती के बावजूद आपराधिक घटनाओं पर अंकुश नहीं लग पा रहा है। जेल से जमानत पर छूटे बदमाश नारु उर्फ नारायण ने युवक का बर्थडे पार्टी में बुलाया और एक लाख रुपए की मांग की। जब युवक ने पैसे देने से इनकार किया तो उसके साथ जमकर मारपीट की। मामला द्वारकापुरी थाना क्षेत्र का है। पीड़ित देर रात जैसे-तैसे भागकर अपने घर पहुंचा। बुधवार सुबह मामले की शिकायत करने थाने आया। टीआई के थाने पर नहीं होने के चलते एक बजे तक वहीं बैठे रहा। जानकारी के मुताबिक, यहां पर इंडियन स्कूल के पास अमित जोशी रहता है। वह डीजे और साउंड का काम करता है। मंगलवार को जेल से छूटकर आए नारू ने अपने साथी चीनू काला, कृष्णकांत की मदद से अमित को बुलाया। वही पार्टी करने लेकर गए। यहां पर बंधक बनाकर 3 घंटे मारपीट की।

लेखक भी खोले आभासी दुनिया के द्वार

संतोष चौबे
महानिदेशक 'विश्व रंग' तथा कुलाधिपति रबीन्द्रनाथ टैगोर वि.वि.

कला और ज्ञान की दुनिया अगर डिजिटल होने की दिशा में आगे बढ़ रही है तो लेखक के लिये यह सवाल अब जीवन मरण का सवाल बन जाता है या तो वह इसमें प्रवेश करे या खारिज होने का खतरा उठाये। मेरा मानना है कि उसे इस आभासी दुनिया में प्रवेश करने की तैयारी करनी चाहिये।

आजकल आभासी दुनिया में काफी साहित्यिक हलचल नज़र आ रही है। सामाजिक मेल मुलाकातों पर रोक है, तो बहुत सारे वर्चुअल प्लेट फॉर्म्स पर मुलाकातें हो रही हैं। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कविता संगोष्ठियों, कहानी गोष्ठियों और परिचर्चाओं का दौर है। किताबें ऑनलाइन प्रकाशित की जा रही हैं तो पुस्तक समीक्षाएं भी अपनी जगह उपस्थित हैं। अचानक नये नेटवर्क्स उभरते दिख रहे हैं जो रचनात्मकता की अभिव्यक्ति की आकांक्षा के कारण और आसपास फैली निगेटिविटी के बीच, जीवन जीने की आकांक्षा से परिचालित हैं।

किसी ने नहीं सोचा था कि साहित्यिक परिदृश्य इतनी तेजी से बदलेगा। गौर से देखें तो ज्ञात होगा कि साहित्यिक आकाश में इस समय सक्रिय लेखकों की एक श्रेणी तो वह है जिसे हम लेखक-पत्रकार कह सकते हैं। पत्रकारिता के अपने मूल व्यावसायिक दायित्व के कारण उन्हें तकनीक के निकट जाना ही पड़ा था और अब वे अपने इस ज्ञान का उपयोग सोशल मीडिया पर साहित्यिक सक्रियता बनाये रखने के लिये भी कर रहे हैं। दूसरी श्रेणी युवा पीढ़ी के रचनाकारों की है जो सूचना तकनीक के आगमन के बाद पैदा हुये और उसके साथ-साथ बड़े हुये। यदि उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि और उनकी शिक्षा उन्हें तकनीकी सुविधा प्रदान कर सकती थी तो वे तकनीक की नैसर्गिक समझ के साथ बड़े हुये। तीसरी श्रेणी उन प्रवासी भारतीय लेखकों की है जिन्होंने विदेश में रहते भारत से संपर्क बनाये रखने के लिये या वहाँ की सामाजिक आर्थिक परिस्थिति के अनुरूप अपने व्यवसाय में अग्रणी बने रहने के लिये तकनीक को अपना लिया था और अब वे अपनी साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिये भी उसका अच्छा उपयोग कर रहे हैं। चौथी श्रेणी उन युवतम लेखकों की है जो उठते-बैठते, जागते-सोते तकनीक के साथ ही रहते हैं। उन्हें उसके उपयोग में कहीं कोई दिक्कत नहीं।

पर इस साहित्यिक परिदृश्य से वे बड़े नाम लगभग गायब हैं, जो सामान्य समय में पत्रिकाओं, संगोष्ठियों और साहित्यिक मंचों की शान हुआ करते थे। कहने की ज़रूरत नहीं कि इसका एक बड़ा कारण तकनीक से उनकी अनभिज्ञता है। मेरी पीढ़ी के कई रचनाकार और मुझसे ऊपर की पीढ़ी के लगभग सभी रचनाकार कम्प्यूटर से एक तरह की वितृष्णा रखते थे। एक समय था जब ये माना जाता था कि कम्प्यूटर तकनीक के आम जीवन में प्रवेश से बेरोजगारी बढ़ेगी और औद्योगिक तथा सेवा क्षेत्रों, जैसे बैंकिंग में, प्रारंभ में उनका कड़ा विरोध हुआ। अस्सी और नब्बे के दशक में कई बार सिर्फ राजनैतिक पक्षधरता के कारण लेखकों द्वारा स्वयं तकनीक को बुरा मान लिया गया और उसके दूरगामी परिणामों पर, विशेषकर लेखन एवं प्रकाशन पर पड़ने वाले उसके प्रभावों पर लेखन प्रक्रिया और आस्वाद की दृष्टि से कोई विचार नहीं किया गया। लेखक धीरे-धीरे तकनीक से दूर होता गया।

तकनीक ने भी लेखक को साथ लेने की कोई कोशिश नहीं की, विशेषकर हिंदी के लेखक को। पहले तो पूरी बहस भाषा के मानकीकरण पर केंद्रित रही और उस पर कोई आम सहमति हिंदी विश्व में नहीं बनी। फिर इनपुट आउटपुट के माध्यमों पर बहस चली जिसे स्थिर होते-होते एक दशक से भी अधिक लग गया। फांट और उस पर आधारित कंटेंट के प्रवाह को भी फांट्स की विविधता बाधित करती थी, कम से कम थोड़ा कठिन तो बनाती ही थी। यूनिकोड के आने के बाद तथा इंस्क्रिप्ट तथा अन्य की बोर्ड के उपलब्ध होने से यह दिक्कत काफी कम हुई है। ग्राफिकल इंटरफेस ने भी कई कामों को सरल बनाया है और अब तो स्पीच से टेक्स्ट जैसे सरल संसाधन उपलब्ध हैं जिन्होंने टाइपिंग की जरूरत को भी समाप्त कर दिया है। अनुवाद के भी कई टूल्स हैं। हालांकि वे अभी औपचारिक अनुवाद ही कर पाते हैं पर शुद्ध और भावात्मक अनुवाद के लिये कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है और जल्दी ही ये समस्या सुलझा ली जायेगी। तकनीक की दृष्टि से हिंदी में काम करना अब ज्यादा सरल और सुलभ हो गया है।

एक साहित्यकार की दृष्टि से उपरोक्त पैराग्राफ बहुत उबाऊ लग सकता है, पर एक उपयोगकर्ता की दृष्टि से नहीं। प्रसिद्ध सॉफ्टवेयर कंपनी माइक्रोसॉफ्ट के जनक बिल गेट्स ने एक दिलचस्प उदाहरण इस संदर्भ में दिया था। उन्होंने बताया कि उनके पिता की कम्प्यूटरों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वे अकाउंट्स के क्षेत्र से आते थे। पर एक बार बिल ने उन्हें कम्प्यूटर पर चल सकने वाले अकाउंटिंग सॉफ्टवेयर और अकाउंटिंग प्रक्रिया के बारे में बताया। वह अकाउंटिंग की कई जटिल तथा उबाऊ प्रक्रियाओं को सरलता से अंजाम दे सकता था। उनके पिता ने उस पर काम करके देखा और पाया कि उनका काफी समय और श्रम कम्प्यूटर के प्रयोग से बच रहा था जिसे वे दूसरे आनंददायक कामों में लगा सकते थे। फिर वे कम्प्यूटर के प्रशंसक और उपयोगकर्ता बन गये।

लेखक को भी कम्प्यूटर को अपने काम की दृष्टि से देखना चाहिये। हालांकि हर लेखक की अपनी रचना प्रक्रिया होती है, पर कुछ काम वह ज़रूर करता है। जैसे लिखना – यानी लेखन, संपादन और किताब के रूप में संग्रहण, तथा प्रकाशन– यानी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन तथा साहित्यिक मंचों पर अभिव्यक्ति। यह दोनों ही काम कम्प्यूटर पर अब आसानी से किये जा सकते हैं। उनमें से अधिकतर तो अब मोबाईल फोन पर भी संभव है। स्पीच टू टेक्स्ट के टूल्स लिखने को सरल बनाते हैं और स्वप्रकाशन के लिये कई माध्यम उपलब्ध हैं। लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं ने ऑनलाइन प्रकाशन शुरु किया है, जिनमें रचनाएं प्रकाशित हो सकती हैं।

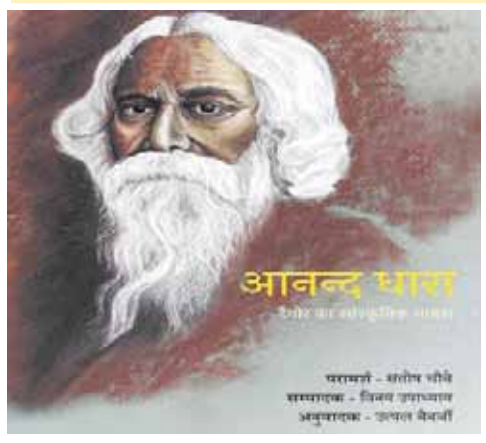

लेखक को भी कम्प्यूटर को अपने काम की दृष्टि से देखना चाहिये। हालांकि हर लेखक की अपनी रचना प्रक्रिया होती है, पर कुछ काम वह ज़रूर करता है। जैसे लिखना- यानी लेखन, संपादन और किताब के रूप में संग्रहण, तथा प्रकाशन- यानी पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशन तथा साहित्यिक मंचों पर अभिव्यक्ति। यह दोनों ही काम कम्प्यूटर पर अब आसानी से किये जा सकते हैं। उनमें से अधिकतर तो अब मोबाईल फोन पर भी संभव है। स्पीच टू टेक्स्ट के टूल्स लिखने को सरल बनाते हैं और स्वप्रकाशन के लिये कई माध्यम उपलब्ध हैं। लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं ने ऑनलाइन प्रकाशन शुरु किया है, जिनमें रचनाएं प्रकाशित हो सकती हैं। ऑनलाइन मीटिंग टूल्स भी अब चलन में हैं जिन पर जाकर एक मंच जैसा आनंद लिया जा सकता है। लेखक एक तीसरा काम और भी करता है, वह है पढ़ना- हालांकि कई लेखक ये काम अब नहीं भी करते हैं- तो उसके लिये भी डिजिटल पुस्तकालय, किंडल जैसे माध्यम तथा मैग्ज़टर जैसे पत्रिकाओं के समूह उपलब्ध हैं और ये संसाधन बढ़ते ही जायेंगे।

तो शुरुआत कहाँ से करें? इस प्रश्न का कोई निर्णयात्मक या निर्देशात्मक उत्तर नहीं हो सकता। रस्ते अलग अलग हो सकते हैं मगर ठिकाना एक ही होना चाहिये। एक संभावित रास्ता ये है। सबसे पहले तो एक लैपटॉप या एक एंड्रायड फोन खरीदें। अगर वह पहले से ही आपके पास नहीं है, और उस पर अपने काम के लायक सॉफ्टवेयर या एप्लीकेशन डाल लें। अब ये मत कहियेगा कि आपके पास इसके लिये संसाधन नहीं हैं। शहरी, मध्यमवर्गीय लेखक को इतना तो मैं जानता ही हूँ, और कह सकता हूँ कि वह ये कर सकता है। कम्प्यूटर की कुछ मूल अवधारणाओं का ज्ञान प्राप्त कर लें जिसमें घर के बच्चे आपकी मदद कर सकते हैं। ज्यादा ज़रूरी है कि आप अपना पहला टास्क, जैसे कोई एक कविता या कोई आलेख कम्प्यूटर पर लिखें या बोल कर लिखें और उसे कहीं भेजें। कुछ ही दिनों में आपका आत्मविश्वास बढ़ जायेगा और आप आभासी विश्व में नये संसाधनों की तलाश करने लगेंगे। इंटरनेट के माध्यम से अपनी रुचि के विषयों पर जायें। आप पायेंगे कि संदर्भ ग्रंथों और ज्ञान का भंडार आपकी उंगलियों के पोरों पर है। फिर उसका उपयोग अपनी रचनात्मकता बढ़ाने में करें। धीरे-धीरे ये प्रक्रिया आनंददायक बनती जायेगी।

अक्सर मित्र पूछते हैं कि आभासी विश्व में लिखा क्या जा रहा है? वहाँ रचनात्मकता का स्तर क्या है? मेरा मानना है कि यह सवाल पूछने के लिये भी आपको वहाँ जाना चाहिये। आप बाहर से इसका उत्तर नहीं दे सकते। कला और ज्ञान की दुनिया अगर डिजिटल होने की दिशा में आगे बढ़ रही है तो लेखक के लिये यह सवाल अब जीवन मरण का सवाल बन जाता है। या तो वह इसमें प्रवेश करे या खारिज होने का खतरा उठाये। मेरा मानना है कि उसे इस आभासी दुनिया में प्रवेश करने की तैयारी करनी चाहिये।

नई उम्मीदों और नई ऊर्जा का उत्सव

'विश्वरंग' के परिपार्श्व में अगर हम देश भर में आयोजित किये जाने वाले तमाम लिट्-फेस्टों को रखकर देखें तो अन्तर साफ-साफ परिलक्षित हो जाएगा। शहर केन्द्रित साहित्यिक आयोजनों की तरह 'विश्वरंग' का अन्तिम लक्ष्य महज स्पॉन्सरशिप हासिल करना कभी नहीं रहा। हम शुरू से एक ऊर्ध्वगामी लक्ष्य को लेकर चले हैं और यह हर्ष की बात है कि भोपाल से शुरू हुई यह यात्रा अब देश की सरहदें लाँघ चुकी है।

कुणाल सिंह
संपादक, वनमाली कथा वार्ता

मुझे याद है, पहली बार जब 'विश्वरंग' की परिकल्पना की गयी थी, यह ऐसे महास्वप्न की मानिन्द था जिसका पूरा होना एकबारगी असम्भव सा प्रतीत होता था। अलबत्ता इसके स्वप्नद्रष्टा संतोष चौबे शुरू से ही आश्वस्ति से पूरमपूर थे। वे बारहाँ कहा करते हैं- विश्व को जोड़ने में कलाओं और साहित्य का कितना महत्व है, इसका अभी ठीक से मूल्यांकन होना बाकी है। हमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ-साथ कलात्मक संवेदना की भी उतनी ही जरूरत है।

हिन्दी के आगे वैश्विक स्वरूप ग्रहण करने की आज जितनी सम्भावनाएँ हैं, उतनी पहले कभी नहीं रहीं। तकनीकी विकास भी इसमें महत्त्वपूर्ण योग दे रहा है। संतोष चौबे का उद्देश्य महज साहित्यिक आयोजन करके ही इतिश्री समझ लेना कतई नहीं रहा। 'विश्वरंग' के परिपार्श्व में अगर हम देश भर में आयोजित किये जाने वाले तमाम लिट्-फेस्टों को रखकर देखें तो अन्तर साफ-साफ परिलक्षित हो जाएगा। शहर केन्द्रित साहित्यिक आयोजनों की तरह 'विश्वरंग' का अन्तिम लक्ष्य महज स्पॉन्सरशिप हासिल करना कभी नहीं रहा। हम शुरू से एक ऊर्ध्वगामी लक्ष्य को लेकर चले हैं और यह हर्ष की बात है कि भोपाल से शुरू हुई यह यात्रा अब देश की सरहदें लाँघ चुकी है। संतोष चौबे द्वारा देखे गये 'विश्वरंग' के इस स्वप्न को पूरा करने की दिशा में उनके मित्र स्व. महेन्द्र गगन, मुकेश वर्मा, बलराम गुमास्ता, विनय उपाध्याय, लीलाधर मंडलोई, अशोक भौमिक आदि उनके हमकदम थे। हमारी तरह के सैकड़ों युवाओं का साथ उन्हें अपने स्वभाव की मृदुता की वजह से सहज सुलभ हुआ। वे अपने मित्रों से अक्सरहाँ कहा भी करते हैं आगे इन्हीं लोगों को करना है भाईसाब, इन्हें साथ रखिये। स्टीफन हॉकिंग की किताब 'ऑन द शोल्डर्स ऑफ जाएंट्स' के शीर्षक का हवाला देते हुए वे कहते हैं- ये युवा हैं, हमारे अनुभव-रूपी कन्धों पर बैठे हैं। इसलिए इनकी दृष्टि हमसे आगे जाएगी ही। आज यह देखते हुए प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि संतोष चौबे के निर्देशन में 'विश्वरंग' की कमान को अपने युवा हाथों में लेने के लिए अगली पीढ़ी के रूप में डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी, डॉ. अदिति चतुर्वेदी वत्स, पल्लवी राव और नितिन वत्स पूरी तरह से तैयार हो चुके हैं। वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के दौरान जब एक बार को मन में यह खयाल आ रहा था कि 'विश्वरंग' को अगली बार के लिए स्थगित कर दिया जाए। विदित हो कि ये सिद्धार्थ चतुर्वेदी और अदिति वत्स ही थे, जिन्होंने इसे ऑनलाइन आयोजित करने की सोची और 'विश्वरंग' के नैरन्तर्य को बनाये रखा। आज 'विश्वरंग' के स्वरूप में जितने भी नवाचार हैं. सब इन्हीं का प्रदेय हैं।

सातवें सोपान तक पहुँचते 'विश्वरंग' से जिस रचनात्मक ऊर्जा का सृजन हुआ, उसका प्रस्फुटन रवीन्द्रनाथ टैगोर के विभिन्न नये शिक्षण केन्द्रों- टैगोर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी केन्द्र, बहुभाषा अनुवाद केन्द्र, वनमाली सृजनपीठ, प्रवासी साहित्य शोध केन्द्र आदि में हुआ। इन केन्द्रों से निकलने वाली पत्रिकाओं में 'वनमाली कथा' का आज के साहित्यिक परिदृश्य में अपना महत्व है। प्रकाशन के मात्र चौथे वर्ष में यह पत्रिका हिन्दी साहित्य समय की केन्द्रीय पत्रिकाओं में शामिल हो चुकी है। इसके विशेषांकों- नवलेखन विशेषांक, भारत भारती विशेषांक, स्त्री सृजनशीलता विशेषांक, वनमाली विशेषांक, युवा पीढ़ी विशेषांक आदि की भरपूर चर्चा होती रही है। विशेषकर 'वनमाली कथा' ने अपने नवलेखन विशेषांक और युवा पीढ़ी विशेषांक के द्वारा हिन्दी कहानी के परिदृश्य में एक नितान्त नयी पीढ़ी को स्थापित कर दिया है। पाठकों की माँग पर इन विशेषांकों के कई संस्करण प्रकाशित करने पड़े। 'विश्वरंग' ने युवा रचनाशीलता के जिस सर्वथा नये माहौल का सृजन किया था, 'वनमाली कथा' ने इन विशेषांकों के द्वारा उसे प्रश्रय देने का अभूतपूर्व कार्य किया है।

उम्मीद की जा सकती है कि संतोष चौबे ने साहित्य, संस्कृति और कला के औजारों से पूरे 'विश्व' को एक 'रंग' में रँगने का जो संकल्प लिया है। 'वनमाली कथा' तथा साथी पत्रिकाएँ इस संकल्प कोपूरा करने में सहयोगी सिद्ध होंगी।

'विश्वरंग' के साक्षी विभूतियों के उद्‌गार

वो जाने कौन सा क्षण रहा होगा, जब संतोष चौबेजी की आँखों में 'विश्वरंग' का सपना जागा होगा। आश्चर्य और सुखद है कि इस उत्सव ने सारी दुनिया में पाँव पसार लिए हैं।
– डॉ. माधुरी रामधारी, सचिव, विश्वरंग सचिवालय

व्यापक स्तर पर इस ढंग से एक वृहद् उत्सव मनाना, जहाँ लेखक, साहित्यकार, रंगकर्मी, चित्रकार.... सारे लोग मौजूद हों, अपने आप में विलक्षण है यह सब! इसकी जो भव्यता है दिल को छूने वाली है। माइण्ड यहाँ ब्लोइंग होता है और ये सब मुझे अनुभव हो रहा है।
–इन्द्रनाथ चौधरी, साहित्यकार

मैं बहुत खुश हूँ कि भारत का 'विश्वरंग' मेरी आँखों और मन में गहरे उतर रहा है। मैं हर बार यहाँ आना चाहूँगी। मैं कजाकिस्तान की जनता की ओर से विश्वरंग में शामिल हुए सभी भारतीय लेखक-कलाकारों को शुभकामनाएँ देती हूँ।
–डेरिगा कोरेयेव, शोधार्थी, कजास्तिान

विश्वरंग में ऐसा लगा मानों 'बरसाने की होली' हो रही है। पहली पायदान पर ही सब कुछ इतना भव्य! सचमुच किसी सुंदर सपने को साकार करने जैसा है। ये बहुत जल्दी सालाना समारोह बनें।
–दिव्या माथुर, लेखिका

मेरा सौभाग्य है कि 'विश्वरंग' में मुझे अवॉर्ड मिला है प्रिंट मेकिंग के लिए। उसके लिए तो खुश हूँ ही। दूसरी बड़ी उपलब्धि यहाँ देश-दुनिया के गुणी और नामचीन कलाकारों से मिलना और संवाद करना है। कई कलाकारों का बहुत अच्छा वर्क देखने को मिला। सेमिनार्स से बहुत कुछ सीखने को मिला।
–अनुपमा डे, चित्रकार

टैगोर यूनिवर्सिटी को थैंक्स कहना चाहूँगी कि उन्होंने हम लोगों को 'विश्वरंग' में इतनी बड़ी अपॉर्च्युनिटी दी। अपनी भावनाओं को हम अपनी लेखनी में अभिव्यक्त करते हैं लेकिन यह अभिव्यक्ति जब 'विश्वरंग' जैसे विशाल मंच का हिस्सा बनती है तो इसका दायरा बढ़ जाता है।
–आलिया शेख, लेखिका

आई एम पोइट फ्रॉम साउथ अफ्रीका। आई एम ऑल्सो फिल्ममेकर, एक्ट्रेस एंड प्रोड्यूसर। फर्स्ट टाइम कमिंग इन इण्डिया। आई एम हेप्पी टू कम हियर। 'विश्वरंग' इज वैरी स्पेशल। साउथ अफ्रीका हैज ए लार्ज इण्डियन कम्युनिटी। सो द कल्चर ऑफ इण्डियन एंड लिटरेचर वेरी क्लोज टू मी।
–लेबो मशीले, लेखिका, साउथ अफ्रीका

मैं मास्को विश्वविद्यालय में हिन्दी, पंजाबी और कुछ धार्मिक विषय पढ़ाती हूँ। हमारे विद्यार्थी वहाँ शौक से हिन्दी सीख रहे हैं। भारतीय फ़िल्मों और कलाओं का वहाँ विशेष आकर्षण है। यह प्रेम काफी पुराना और गहरा है। 'विश्वरंग' ने भारत और रशिया के बीच एक नए सांस्कृतिक रिश्ते की शुरुआत की है। मुझे निजी तौर पर यहाँ आकर बहुत लाभ हुआ।
–लिमियो खोरहोवा, शोधार्थी, मास्को विवि, रशिया

कला और संस्कृति के क्षेत्र में भोपाल दुनियाभर में मशहूर रहा है। 'विश्वरंग' ने निश्चय ही एक अनूठा अध्याय जोड़ा है। इस मंच पर टैगोर जैसे कला गुरु के संगीत योगदान पर आधारित प्रस्तुति देकर मैं और मेरा समूह खुद को सौभाग्यशाली मान रहे हैं। सचमुच, यह उत्सव एक उत्तेजक अनुभव रहा।
–पीलू भट्टाचार्य, संगीतकार-रंगकर्मी

'विश्वरंग' में युवाओं को हम सम्बोधित कर रहे हैं और एक संदेश दे रहे हैं कि वो देश की वर्तमान राजनीति को समझें, देश की वर्तमान सामाजिक चेतना को परखें। एक ज़रूरी हस्तक्षेप लगा युवाओं का यहाँ होना। हम जैसे वरिष्ठ कवियों को युवाओं के साथ इन्टरैक्शन का जो अवसर मिला वह दुर्लभ और आत्मीय क्षण रहा। सब तरह के उतार-चढ़ाव मैंने हिन्दी कविता के देखे हैं, लेकिन मैं हमेशा आधुनिक कविता के निकट रहा और तात्कालिक सत्य और यथार्थ को चित्रित करता रहा अपनी कविता में। विश्वरंग में आए युवा रचनाकारों से ऊर्जा मिलती रही मुझे।
–ऋतुराज, कवि-चिंतक

मैं ट्रांसजेण्डर हूँ। टैगोर को लेकर जो कुछ काम विश्वरंग के दौरान देखने को मिला, उसका मैं समर्थन करता हूँ। ये फेस्टिवल तो होना ही चाहिए। मेरी सोसायटी के लिए तो बहुत ज़रूरी है यह सब। हमारी लड़ाई और भी स्ट्रॉग होगी।
–शम्भूनाथ चौधरी, लेखक

अठारह खंडों में कथा ग्रंथ, हिंदी कहानियों का अंग्रेजी में अनुवाद, उत्तेजक विचार-विमर्श और लोक कला के रंग प्रसंग... एक उत्सव में कितना कुछ! संतोष चौबे और उनकी पूरी टीम की ऊर्जा और तेजस्विता के लिए विस्मित सद्भाव से भरी हुई हूँ मैं।
–ममता कालिया, कथाकार

'विश्वरंग' के बारे में दो बातें कहूँगी। 'विश्वरंग' पहला ऐसा आयोजन है मेरे अनुभव में जहाँ मैं विश्व को एक होते हुए देख रही हूँ। सारे आगंतुकों में उत्साह, स्नेह और खुशी का भाव है। भारत से बाहर रहकर एक कथाकार के रुप में हिन्दी के संसार से जुडना एक अलग ही अनुभव है। वनमाली कथा सम्मान समारोह में शामिल होकर मुझे गर्व की अनुभूति हुई।
–सुषम बेदी, कथाकार, अमेरिका

जहाँ तक मेरी स्मृति है, कोई चित्रकला प्रदर्शनी टैगोर को लेकर इतने सम्पूर्ण ढंग से इसके पहले नहीं हुई है। 'ब्रिदिंग स्टोन' नाम की भी एक छायाचित्रों की प्रदर्शनी है, जो अमूर्त शिल्प में पहली बार भारत भवन में हुई। मैं मानता हूँ कि इस तरह का ये जो अपूर्व आयोजन है, किसी यूनिवर्सिटी के द्वारा विश्व में पहली बार हो रहा है। यह इतिहास की घटना है, जिसे कि दर्ज किया जाना चाहिए।
–लीलाधर मण्डलोई, कवि-आलोचक तथा सह निदेशक 'विश्वरंग'

विश्वरंग मेरे लिए न केवल टैगोर बल्कि हिन्दुस्तान की सुंदर संस्कृति को गहराई से जानने का एक जरिया बना है। मुझे आश्चर्य होता है कि टैगोर का लिटरेचर सारी दुनिया की मनुष्यता की आवाज बन सका है।
–सेमिदा डेविड, लेखक, रोमानिया

'विश्वरंग' का माहौल काफी रंगमय है। एक सुबह यहाँ बच्चों की उमड़ती भीड़ को देखकर अच्छा लगा। नई पीढ़ी में कला और संस्कृति का बीजारोपण करने में ऐसे जलसो की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। अच्छा लगा कि 'कथादेश' के अठारह संग्रहों का ऐतिहासिक प्रकाशन हुआ। गर्व कि इस दस्तावेज में एक कहानी मेरी भी है।
–विभा रानी, कथाकार-रंगकर्मी

नया क्षितिज : टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिंदी केन्द्र

संजय सिंह राठौर
सचिव, विश्वरंग सचिवालय

'विश्वरंग' टैगोर अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव वैश्विक मंच के माध्यम से रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल ने संपूर्ण विश्व में हिंदी प्रेमियों को एक स्थान पर लाने का अभूतपूर्व सफल प्रयास किया है। विश्व रंग की अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों में 50 से अधिक देशों के सैकड़ों रचनाकारों एवं हजारों लोगों ने रचनात्मक उपस्थिति दर्ज करा कर इसे अविस्मरणीय बनाया है। यह देश के इतिहास में पहली बार हुआ है कि किसी शिक्षण संस्थान (रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय) ने देश-विदेश के 100 से अधिक भाषा, कला, साहित्य, संस्कृति और शिक्षण संस्थानों को साथ लेकर साहित्य का अद्भुत संसार रचा। वर्ष 2019 में विश्व रंग महोत्सव का प्रथम अद्भुत आयोजन मिंटो हॉल, भोपाल में किया गया था। वर्ष 2019 से 23 तक विश्व रंग के पाँच अविस्मरणीय संस्करणों का आयोजन वैश्विक स्तर पर किया गया है।

'विश्वरंग' टैगोर अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव का प्रमुख हासिल रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में 'टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र' की स्थापना रहा है। यह केन्द्र विश्व भर में हिंदी शिक्षण के विस्तार के लिए व्यापक नेटवर्क तैयार करने और

हिंदी के पठन-पाठन के कार्य को संपादित करने का कार्य संपादित कर रहा है। इसके लिए मानकीकृत पाठ्यक्रम एवं टेस्ट प्रक्रियाओं की शुरूआत करने हेतु सामग्री निर्माण का कार्य भी किया गया है। लगभग 30 देशों से टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिंदी केन्द्र की स्थापना के लिए सहमति पत्र भी प्राप्त हुए हैं।

हमारे लिए यह बहुत गर्व का विषय है कि पूरे विश्व में हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ती जा रही है। भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी भाषा शिक्षण को कौशल के रूप में रेखांकित किया गया है। विदेशों में भारतीय संस्कृति को जानने और हिंदी सीखने का रूझान काफी बढ़ रहा है। इसी तरह भारत के हिंदीतर भाषी राज्यों खासकर उत्तर पूर्वी एवं दक्षिण के राज्यों में भी हिंदी सीखने वालों की मांग बहुत बढ़ी है।

हिंदी की विश्व व्यापी स्थिति को सुदृढ़ करने हेतु 'विश्वरंग' के अंतर्गत 'टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिंदी केन्द्र' की स्थापना रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल के परिसर में की गई है। उल्लेखनीय है कि विश्व रंग महोत्सव, 2023 में माननीय श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक', पूर्व शिक्षा मंत्री, भारत सरकार के करकमलों से भव्य समारोह पूर्वक इसका उद्घाटन किया गया है। अब इस अंतरराष्ट्रीय हिंदी केन्द्र के अंतर्गत विश्व के 30 से अधिक देशों की संस्थाओं और विश्वविद्यालयों में हिंदी के प्रचार-प्रसार और

विधिवत पठन-पाठन के लिए संबद्धता प्राप्त कर अपने देश-ब्रिटेन, अमेरिका, नीदरलैंड्स, सिंगापुर, मॉरीशस, रूस, सूरीनाम, बेल्जियन, यूएई, आस्ट्रेलिया, आयरलैंड, कनाडा, न्यूजीलैंड, नेपाल, स्पेन, स्विट्जरलैंड, श्रीलंका, जापान, थाइलैंड, मलेशिया, पुर्तगाल, यूक्रेन, उजबेकिस्तान, चीन, वियतनाम, जर्मनी, कतर, केन्या, इंडोनेशिया आदि में अंतरराष्ट्रीय हिंदी केन्द्रों की स्थापना कर ली गई है।

'विश्वरंग' टैगोर अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं कला महोत्सव का प्रमुख हासिल रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में 'टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र' की स्थापना रहा है। यह केन्द्र विश्व भर में हिंदी शिक्षण के विस्तार के लिए व्यापक नेटवर्क तैयार करने और हिंदी के पठन-पाठन के कार्य को संपादित करने का कार्य संपादित कर रहा है। इसके लिए मानकीकृत पाठ्यक्रम एवं टेस्ट प्रक्रियाओं की शुरूआत करने हेतु सामग्री निर्माण का कार्य भी किया गया है। लगभग 30 देशों से टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिंदी केन्द्र की स्थापना के लिए सहमति पत्र भी प्राप्त हुए हैं।

इसके अंतर्गत वैश्विक स्तर पर हिंदी शिक्षण के लिए रचनात्मकता और पठनीयता पर विशेष ध्यान केंद्रित करते हुए 'हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रम' का निर्माण अत्यंत गंभीरता के साथ किया गया है। इसके लिए व्यवस्थित परीक्षा और स्टैंडर्ड सर्टिफिकेशन की व्यवस्था भी की गई है। इस हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रम के द्वारा ऑनलाइन-ऑफलाइन दोनों माध्यम से बहुत ही रोचकता के साथ हिंदी सीखी जा सकेगी।

टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिंदी केन्द्र के अंतर्गत 'हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रम' के साथ-साथ हिंदी पठन- पाठन के लिए और भी रोचक और पठनीय डिजिटल सामग्री का निर्माण किया जा रहा है। लोगों तक इसकी पहुँच को भी आसान बनाया गया है। हमारे नेटवर्क का मूल आधार हिंदी ही हैं।अंतरराष्ट्रीय हिंदी केन्द्र अन्य देशों के हिंदी पाठ्यक्रमों का प्रमाणीकरण भी करेगा। इसकी शुरुआत यू.के. हिंदी समिति के पाठ्यक्रम से की गई है। केन्द्र के माध्यम से विदेशी भाषाओं के साहित्य को हिंदी में अनुवाद करने की परियोजना को भी मूर्त रूप दिया जाएगा। यह केन्द्र वैश्विक स्तर पर प्रवासी भारतीयों की हिंदी भाषा एवं साहित्य की गतिविधियों को एक मंच पर लाने का महत्वपूर्ण कार्य भी करेगा। इस दिशा में वैश्विक स्तर पर रचनात्मक भूमिका निभा रहे डॉ. जवाहर कर्नावट, को टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिंदी केन्द्र का निदेशक बनाया गया है।